

श्रीश्रीश्री गवतुः शिवायान्यासध्यानयोगे नमो

आशा सहकाधि

४९४

ASHA ARCHIVES

१ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ अस्य गुरुगवङ्गीतामालासः
 उस्वरुगयाञ्चदद्यास. मधिननुकुपूद ॥ १ ॥ श्रीकृ
 पू ४ यनमादवता ॥ ॐ (ॐ) शानच (ॐ) चत्त. प्रह्लाः
 वादीष्टराषस. तिवीर्ज ॥ सर्वधर्मात्यत्रिस्तुष्ट. माम १ म
 कं ॐ नर्दं वृज. ति ॐ कि ४ ॥ ॐ हं त्वी सर्वपापशः
 भादपिष्ठा मि ॐ च ॥ ॐ ति कीलकी ॥ नेनं चिदंति

ॐ शान्तिनेनदहतिपावक. ॐ त्वं गुह्याहीनमः ॥ नवे
 नकुदयत्यापान (ॐ) षपतिमारुत. ॐ तितर्जनीहीन
 मः ॥ ॐ च्छायमदाह्याय. मकुधा (ॐ) शानुवच. तिमधुः
 माहीनमः ॥ नित्य ४ सर्वगत ४ सुधनचत्तार्यसनात
 न ॐ त्वं नामिकाहीनमः ॥ य (ॐ) मया श्वरूपाहि ॐ
 त (ॐ) थसहस्र ॐ ति कनिष्ठिकाहीनमः ॥ नाना
 विधनिदिद्यानि. नानावर्त्मकानि च. तिकंतत्रकत्रपृष्टाः
 नमः ॥ नेनं चिदंति ॐ शान्ति. ति हृदयाय नमः ॥ न

येन क्लृदयात्पापं नृमिसि त्रसस्वाहा ॥ अक्षयममदा ह्य
य नितिलिखाय वीषट् ॥ नित्यं ४ सर्वगत ४ स्मृति
निकवयाय हं ॥ पञ्चमं पार्थरूपाक्षी ननु नुय वीषट् ॥
नानाविधानि दिव्यानि यस्तु यद् ॥ श्री कृष्ण प्रत्यये
अथ विनिष्ठा गथा ॥ अथ ध्यानं ॥ पार्थाय प्रणिवाधि
ताम गवता नानाया न न स्वयं व्याध न ग्रथिता पु
नानमुनिनाम ध्याम हारा त्र तं ॥ अक्षयममदा ह्य

हीरुगवटीम प्लाद ॥ अथ ध्यायिनीम मन्त्राम नसा
दध्यामिरुगवटी त र व द्ध षिनी ॥ १ ॥ नमो भक्तु तः
व्या ॥ विष्णु लवुङ्ग रू ला त्र वी लाय तपत्र नत्र ॥
य नत्वयारा त त तैले पूर्वः ॥ प्र ज्वालि ता ह्म नम
यः प्रदीपा ॥ २ ॥ प्रयं न प त्री जाताय तत्र वं त्रेक पा
नथ ॥ ह्म नमुद्राय कृष्णायः गीता मृत दु ह्म नमा ॥ ३
मसर्वा पनी ष दो गा वी ॥ हा ग्वा गा पाल नंदनः ॥

पार्थिवत्तस्सु श्रीशक्त्या दुःस्वंगीतामृतं महत् ॥ ४ ॥
 वसुदेवसुतं देवकेशचानूतनमर्चनं ॥ देवकीपत्रः
 मानंदं कृष्णं वंदे जगद्गुरुं ॥ ५ ॥ श्रीश्रुतानतदा
 जयद्रथजलागां धात्रीनीला तिला शाल्यग्राहवती
 कृष्णवाहिनी कर्णवला कुला ॥ नृश्रेष्ठ्यां मा
 विकर्त्री धीमतामकरादुर्ध्वना वतिनी ॥ सा त्री
 नी खलु पादवार्त्तवनदी केवर्त्तकः कणव ॥ ६ ॥
 पात्राण्यवचः सना जममलंगीतार्थगर्था क्ति

3

टं नानात्रयानककंसनरुत्रिकथासंक्षयनावाधि
 तं ॥ सा कंसजनषष्ट्यैव रुद्ररुः क्षपीयमानं सुः
 दा रूपाहाततपंकजं कलिमलप्रधमिनः प्रय
 क्ष ॥ ७ ॥ पूकं कतिवाचालं पंगुलं घयत्तजिनिं ॥
 यत्कृपातमहं वंदे परमानंदमाश्रवं ॥ ८ ॥ यं वं ह्ना
 वतु नंदतु दुःसुतः सुचित्रिदिवी सुखेष्टः सा
 गपदक्रमापनिषदेर्गयंतियं सामग ॥ श्यानाव

स्मिततदुत्तनमनसापत्यंतियथागिभा, यस्यात्तन
विदुःसुनासुनगा द्वायतस्मेनमः ॥८॥ ॐ तिन्या
स, ध्यान, क्षात्र, समाप्तः ॥ ॥ सुरां ॥ ॥

१ॐ नमः ४॥ हगवा नवास्वदेवाय ॥ ८॥ वा ८॥ वसु
 ख व्याख्या, वातु य्यै ल्व कव कु त ॥ ८॥ द धनमदुर्तः
 वन्द, यत्रमानन्दमाधर्व ॥ १॥ आमाधर्वयुष्टीम्मा
 मा, धर्ववि ८॥ १॥ मादनात् ॥ गहु किर्यं क्रि त ४ कु
 र्व, गाता व्याख्यां सुवोधिनी ॥ १॥ हाव्यकावमनीस
 म्यकु, न द्याख्यां तु नि वस्तु थ ॥ यथ मति सुमालो
 श्र गाता व्याख्यां सुमानह ॥ ३॥ गाता व्याख्या य नैय

१॥

स्या, या ० मातृ युयत्न ॥ १॥ सूर्य सुवाधिनी टीका, सदा
 ८॥ यामनाधिहि ॥ १॥ ॐ हखलसकललोकः
 वं दितवचन, हा यत्रमकार, द्विका हगवान्दवकीन
 नदनस्तुल्य, नवि डं हि त ८॥ कमाह विजु, मि रति
 व क न या निरु धर्म य वि त्या ग यत्र धर्मा हि सन्धि
 यत्रमर्क, न धर्म ज्ञान नह स्या यदगपु वन, नस्मा

२७

यं यदनाहस्य मुखयद्वा विनिष्कृता ४॥ ॥
 ॥ धृगनाष्टु उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयु-
 त्सवे ४॥ मामका ४ या द्रुवा ज्यैष्ठिकि मद्रुच्यंत सज-
 य ॥ १ ॥ संजय उवाच ॥ दृष्ट्वा तु पाण्डु पाण्डुनां कै-
 रु दूर्या धनसुता आचार्य उवाच ॥ गम्य नाहा वच-
 नमब्रवीत् ॥ २ ॥ यज्येतां या द्रुपदा हर्म आचार्य

महर्गा वसू॥ वृत्तं द्रुपदयुक्तां वनिष्यं ह्यधाम
 ना॥३॥ अत्र गूना महर्गा सा, रामर्कं न समायुधि॥ य
 युधना विनाटय, द्रुपदय महानथ॥४॥ धृष्टः
 कर्तुः किमान्॥ काभावाज्जय्यवान्॥ युवति
 कुनिराजम्, जेय्यननयं गव॥५॥ युधम
 न्युज्य विक्रान्त, उल्लसो जाय्यवान्॥ सो हडा

अ
 ३

दोषदयाश्च, सर्वत्र वसन्तान्॥६॥ अकृष्णयनम॥७॥
 अस्माकं तु विजिज्ञाय तान्निवाधद्विजालुमं॥ नाय
 काममस्य न्यस्य, संज्ञार्थं तानुदीमिन्॥८॥ रुवाः
 महीषाश्च कर्धुश्च, कृयाश्च समितिर्नय॥ अथ
 कामा वि कर्धुश्च, सोमदहिरुथेवच॥९॥
 अन्यचवहव॥१०॥ गूना, मयर्थे कृतीयिता॥

नानाभुक्तं पुद्गलं ४ सर्वयुद्धविष्मन्वदा ४॥ २॥
 अथ यथा यत्तदस्माकं बलं होष्याहिनं किं न। य
 यथा यत्तदस्माकं बलं होष्याहिनं किं न ४॥ १०॥
 अथ नष्टं सर्वं यथा रागमवस्थिता ४॥ होष्या
 मंवाहिनं दं तु रुवन् ४ सर्वं वदि ॥ ११॥ न स्यात्
 न नयन्तुर्वं कुर्वन् ४ यिता मद् ४॥ सिंहनादविः
 नद्या ४ न सर्वं दं यथा यवान् ॥ १२॥ गत ४

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

कादर ॥ १५ ॥ नन विजयनागा, कूनी युगायधि
 छिन ॥ नकु ल ॥ सहदव ॥ सधा वम हियव्यः
 को ॥ १६ ॥ काय्य स्वयनमथास ॥ निरखी वम हाः
 नथ ॥ १७ ॥ दुष्ट दुष्टा विनाद ॥ साय कि ॥ यना कि
 न ॥ १८ ॥ दुयदा डो यदया ॥ सर्व ॥ यथिवा
 यत ॥ हो रुड ॥ महावा दू ॥ रखा नद ॥ यथ क

श्री
 १

यथ क ॥ १९ ॥ सखा धा धरु ना शु धर्म, हदया निव्य
 दावयतू । नरु ॥ यथिवा ॥ शु मूला यनुनादः
 यतू ॥ २० ॥ ॥ अथ व्यवहृता नृणां धरु ना शु नू
 कवि धरु ॥ युतर्ल म सुसी पा न, धनू द्य मया धुव
 ॥ २१ ॥ हया क म नदा वाक मिदमा ह मही यतः ।
 मनथा नरु था म्म ॥ अथ ॥ क्वा यय म ॥ यतू ॥ २२ ॥

यावदतानिनाक्षुहं यादू कामानवस्ति तान् ॥ केर्मया
 सहयादवा मस्ति ७ हा समुद्रम ॥ २१ ॥ या स्तमानान
 वक्षुहं य ७ न २ तु समा गता ॥ धर्मा वा युस्यद्वर्
 दं यद्विप्रियचिकीर्षव ॥ २२ ॥ संज्ञय उवाच ॥ ७ वमः
 का हृषीक ७ ७ गुता क ७ ७ नरानन ॥ सनया वरुथा
 म ७ ७ स्तययित्वा नथ रु म ॥ २३ ॥ हा वा डा हा ७ ७

७
 ७

मुखत ७ सर्वेषां महि कि तां ७ उवाच पार्थ य ७ ७ ता न्
 मयं गा ल्क नू निनि ॥ २४ ॥ ततु य ७ ७ सि ता न् यार्थ ७
 यि रु न थ यि ता महान् ॥ ७ ७ वा र्था मा तु लान् ७ ७ रुः
 य ७ ७ ७ ७ सरवी रु थ ॥ २५ ॥ ७ व स ना सु ह द ७ ७
 व स न था व रु था व यि ॥ ता न् समी क्षु स की क य ७ ७
 वी न् ध न व सि ता न् ॥ २६ ॥ कृ या या य न या वि क्षा वि
 वा द नि द म तु वा न् ॥ ७ ७ न उ वा च ॥ ॥ ७ ७ मं स्य रु न

कृष्णयुयुत्सुसमयस्मिन् ॥१२८॥ सादन्निमसमग्नता
 हि, मुखे च यविष्णु व्यति। वंद्यं च मनीषमश्राम
 हर्षश्च जायते ॥१२९॥ गंतावमुं हं हस्त, त्वेकेव
 यविदकृता नचमक्राम्यवस्तुं प्रमती वचममने न
 ॥१३०॥ निमिरुनिचयश्चमि, विचनीतानिकमवाः
 नच(गु)थानुयश्चमि, हस्तास्वजनमाहवा ॥१३१॥ नका

केविठयं कृष्णनचनार्थं सखानिवा। किन्नानाश्चन
 (म)विन्दकिहा (ने)र्जीवितनवा ॥१३२॥ यवाम (थ)का
 कितना, नाश्च हागम सखानिवा। तं तुं भवा स्मितायुद्ध,
 प्राधर्मस्तु काधनानिवा ॥१३३॥ आचार्या ४ यितन ४
 यग, स्त (थे) वचयितामहा ४ मातु ला ४ स्वसुना ४ योग,
 ४ ध्या ला सर्व धिनन्ध ॥१३४॥ उता न्ने हं तुमिष्ठमि

घृणा इयिम धूसुदना श्रियिगुला कना कस्य हना ॥
 किं तुमही कर्ते ॥ ३५ ॥ निहय धर्मा नष्टा न ॥ काय
 नि ॥ स्यात्ता नार्दना ॥ यायमवागु यंदस्मा ह ले नाना
 नता यिन ॥ ३६ ॥ नस्मान्ना ही वयं हेतु, धर्मा नष्टाः
 स्यां धवान् ॥ स्वजनं हि कथं हत्वा, सुखिन ॥ स्याम
 मा धव ॥ ३७ ॥ यद्य यत् न तप म्यंति, लाहाय हन

७
 २

यत्त स ॥ कलकय कर्तदा वी, मिगुडा हव यागर्क ॥ ३८ ॥
 कथं भद्र यम स्मा हि ॥ याया दस्मानि वर्हि तु ॥ कलक
 य कर्तदा वी, युय म्य हिर्ज्ञ नार्दना ॥ ३९ ॥ कलकय यु
 हास्यति, कल धर्मा ॥ सनातना ॥ धर्मा नष्ट कलकः
 त्स्म, मधर्मा इ हि रयत्युत ॥ ४० ॥ अधर्मा हि रवात्कृष्ण,
 पुद्गल नि कल मि य ॥ मी ष्ट दृष्टा सुको र्ध्व य, जाय
 का

७२

अहं वन मह त्या यं कर्तुं वा वणिता वयं ॥ यदा स सख
 लाह न, हं तुं सज्जन मू द्यता ॥ ५५ ॥ यदि मा मयुगी
 का न मम मुं न मु या मय ॥ ५६ ॥ धर्मे वा युवा न (हा ह न्य
 सु भर्तु मग न रू वे न् ॥ ५७ ॥ संजय उवाच ॥ ७ वम युवा
 र्जु नः संख्या न (धये सु उवा वि न् ॥ ५८ ॥ वि स्र स्र स म
 नं वा यं (धये क सं वि ग्न मा न स ॥ ५९ ॥ ॥ ७० ॥ ति

श्रीरामवक्त्रा गायत्रिनिषत्सुयुक्त विद्यायां गायत्रिः
 कुं प्राकृष्टं न संवाद अर्कं न विषादा नाम युथ
 भाष्य ४॥१॥ संजय उवाच ॥ तन्मिथ कृपया विष्णुम
 र्पूषु कूलकृष्टी विपीदकनिर्दवायै मवाचमधु
 सूदन ४॥१॥ गुं नै न हत्वा हि महानुरावा न (गुं या रा कुं
 ॥ श्रीरामवक्त्रा गायत्रिनिषत्सुयुक्त विद्यायां गायत्रिः
 मय हि नै ॥ अनाय कृष्ट मय ग्य मकी हि कवमः

७
 १०

कृन् ॥२॥ कृन् मास्म गम ४ या र्थ नतल्लयु ययद्यन ॥
 कृन् कृन् दययै वल्य ए कृन् कृन् यनन य ॥३॥ ॥
 ॥ अर्कं न उवाच ॥ कथं ही अमह संख्यं दुर्द्वि वमधु
 सूदन ॥ १० बृहि ४ युक्ति था त्स्या मि पूजा ह विविस्तुद
 न ॥४॥ गुं न हत्वा हि महानुरावा न (गुं या रा कुं
 हे कृन् मया ह लाका ॥ हत्वा र्थं कुं कामां कुं कुं गुं न ह
 य कुं जी यरा गम नृधि नयु दि ग्य न ॥५॥ नये न हि

अ० क न व लो न नो या य द्वा ऊ य म य दि वा ना ऊ य य ॥
 या न व ह लो न जि ऊ वि बा म स्त व क्षि ना ॥ ५ ॥ मूर्खे ध
 र्ना कु ॥ ६ ॥ का य द्वा धा बा य ह न ल हा व ॥ ७ ॥ य
 मि लां ध म्म स मूर य ना ॥ ८ ॥ य वु य ॥ ९ ॥ स्या नि नि नि न व
 हि न म् नि बा सु ॥ १० ॥ धि मां ली पु य न ॥ ११ ॥ न
 हि पु य ध्म मि म मा य न द्या द्य क क म्म क्क व द्वा मि
 न्द्रि या ध्म ॥ १२ ॥ अ वा य रू मा व ॥ १३ ॥ स य ल म्म ड् न्द्रि ना र्क स न

अ
 ११

ध्म म पि ना धि य ली ॥ १४ ॥ स ऊ य उ वा च ॥ १५ ॥ व म्म क्क द्वा क
 म्म गु ण क म्म य व न क य न था स्य ण्ठि ति ध्म वि न्द्र म्म क्क
 रू व्वां व रू व ह ॥ १६ ॥ त म्म वा च द्वा क म्म ॥ १७ ॥ स नि व रू
 न्द्रि ना ॥ स न था व रू या म्म वि बा द न्द्रि मि द य च ॥ १८ ॥
 ॥ ग्री ह ग वा न्द्रि वा च ॥ १९ ॥ अ ध्म वा न्द्रि ध्म व रू य म्म वा द्वा ध
 हा व स ॥ २० ॥ ग न स न्द्रि ग ना स न्द्रि ना न्द्रि ध्म व रू य धि ना
 ॥ २१ ॥ न ल वी ह्म क्क तु ना स न्द्रि न म्म क्क ना धि या ॥ २२ ॥

नञे व नरु विष्णाम सर्ववयमतः यव ॥ ११ ॥ द हि नास्मि
 न्यथ द ह, को मा र्थो व न रू न । त थ द ह न न य या फि,
 धा व रु न न मू द्रु ति ॥ १२ ॥ मा नु स्य र्म मू को न य मा
 भा यु स्र ख द् ४ ख द ४ ॥ अ ग मा या यि ना नि ला, कृ तिः
 ति कृ ल्हा व न ॥ १३ ॥ ॥ य हि न य थ यं ल त पु न्
 र्थ पु न् र्थ व र्ह । स म द् ४ ख स्र ख धा व, ४ स १ न त लो य
 क ल्य त ॥ १४ ॥ ना स भा वि द्य न र हा धा, ना हा था वि द्यः

११

न स ग ४ ॥ उ ह या न यि दृ ष्ट १ न, ल्हा न या कृ ल्हा द मि हि धा न्
 वि ना नि गु न द्वि द्वि, य न स र्व मि दं न र्म ॥ वि ना न म य यः
 स्या स्य, न क र्ति ल्हा र्म म ह ति ॥ १५ ॥ अ न व न नु म दः
 हा, नि ल्हा स्या क ४ न ना वि द ४ ॥ अ ना नि ना यु म य स्यः
 न स्या य् धा स्र हा व न ॥ १६ ॥ य न न व हि ह न र्म य (स्ये)
 न म न्य न ह र्म ॥ उ र्म को न वि का नी नो, ना यं ह कि न ह
 न्य त ॥ १७ ॥ ॥ न ज्ञा य न मि य न या क द वि, ना यं रु

स्वाहवितावानरुय ॥ अहानि ह्य ॥ १०॥ अहानि ह्य ॥ १०॥ अहानि ह्य ॥ १०॥
 नह न्यतं ह न्यमाने न वाय ॥ १०॥ अहानि ह्य ॥ १०॥ अहानि ह्य ॥ १०॥
 यनु नमज्जमययं कथं सवृत्त ॥ १०॥ अहानि ह्य ॥ १०॥ अहानि ह्य ॥ १०॥
 हंति कं ॥ ११॥ वासासि ऊर्ध्वं नियथाविहाय नवानि
 गच्छाति नवा इयना हि न तथा मवा ना नि विहाय ऊर्ध्वं
 ह्य न्यानि संजाति नवानि दह ॥ १२॥ अहानि ह्य ॥ १०॥ अहानि ह्य ॥ १०॥
 ॥ न न विदुः दक्षिण कुक्षि न न दह नियाव क ॥ न न न

श्री
 ११

क्लृप्तं दयं ह्यथा न लभ्यति मा वृत्त ॥ १३॥ अहानि ह्य ॥ १०॥ अहानि ह्य ॥ १०॥
 न दक्षिण कुक्षि न दक्षिण कुक्षि न दक्षिण कुक्षि न दक्षिण कुक्षि
 ह्य न च ला इयं स नाग न ॥ १४॥ अहानि ह्य ॥ १०॥ अहानि ह्य ॥ १०॥
 य म वि का य इय म य ता गे । तस्मा द व ति दि ह्ये न नानु
 लभ्यति नु मह सि ॥ १५॥ अहानि ह्य ॥ १०॥ अहानि ह्य ॥ १०॥
 अथ ये न नि ह्य जा गे, नि ह्य वा म न्य सं मृ गी । तथा इ

चित्तं महाबाहो नैवं लभ्यते चित्तु महसि सि ॥ २७ ॥ ॥ ज्ञान
 संहि क्रिया मृत्यु क्रवेज नमृत स्यात् । न स्मादय नि
 हा अर्थ ३ ॥ न त्वं लभ्यते चित्तु महसि ॥ २८ ॥ अथ क्वादी
 निरूतानि । य कू मत्या निरूतन । अथ कू निधना न्यव
 गतु काय विद्वयना ॥ २९ ॥ अथ य व स्य नि कृत्वि
 दन मा श्व य व द नित (ये वया न्य ४) अथ य व धेन
 म न्य ४ ॥ लभ्यते चित्तु महसि ॥ ३० ॥ अथ य व धेन
 म न्य ४ ॥ लभ्यते चित्तु महसि ॥ ३१ ॥

अ
 १५

दहं नित्यमव लभ्यते यं दह सर्व स्यात् न । न स्मात्सर्वा
 निरूतानि । न त्वं लभ्यते चित्तु महसि ॥ ३० ॥ अथ धर्मम
 यि या व द्धु न वि कं यितु महसि । धर्म्यादि यद्वा व
 या इत्यतः कृति य स्य न वि द्यत ॥ ३१ ॥ यद्वा व द्धु या वा द्धु
 य न् । अथ धर्मम य व द्धु त । सुखिन ४ कृति या ४ या
 थ लरु न यद्वा मा दृ ॥ ३२ ॥ अथ यत्न मिर्म धर्म
 स गमन क वि द्यति । नत ४ अथ धर्म कारि अ हि

स्वापायमया कृत्वा ॥ ३३ ॥ अकार्त्तं वायिहूतानि कथः
 विष्णुनिर्गन्धं यथा । सहावित्तस्य वाकीर्त्तं मन्त्रेण दत्ति
 विद्यते ॥ ३४ ॥ हयादुना दयवर्त्तं मन्त्रेण तत्त्वां महावत्
 ४। यथावर्त्तं वदु मन्त्रा हूलाया ह्यसिलायव ॥ ३५ ॥
 अथवायादा अथवदु न्वदि विष्णुनिर्गन्धं वाहिता ४। निन्द
 नस्तवसा मर्थं नताद ४खननकु किं ॥ ३६ ॥ हूतावा
 याय्यसि स्वर्गं किं त्वावाहा कृत्वा मन्त्रा ॥ नस्तव दहिष्ठः

श्री
 १५

कोभय युद्धाय कृतनिष्ठय ॥ ३७ ॥ सर्वद ४खसमक
 स्वा लालाला हो कथा कथो । नता युद्धाय युद्धस्य नेययाय
 मया कृत्वा ॥ ३८ ॥ ॥ नुष्ठाग ४रिहिता ह्यस्थ वृद्धिर्थाग
 लिमां ४६ ॥ वृद्धा युक्ता यथायाथ कर्मवन्धं युद्धास्य
 सि ॥ ३९ ॥ नेहा हि कुमना ४६ ॥ इति युष्वाया न विद्यते
 । स्वल्पमया ह्यधर्मस्य ज्ञायकम हूता हयात् ॥ ४० ॥ य
 वसायानि का वृद्धि नकहक नन्दन । वदु ४६ ॥ स्वा कृत

नाञ्च वृद्धथा इव वसायिनी ॥ ४९ ॥ यामिमां यच्छिनां वा
 च युवदह्यु विवस्विनः ॥ ५० ॥ दवा दत्र ताः यार्थमान्य
 दस्तीति वादिनः ॥ ५१ ॥ कामात्मानः ॥ ५२ ॥ स्वर्गयना
 ज्ञानकर्मरुलपुदां ॥ क्रियाविजायवद्वर्लाहा (नेत्रः)
 यन्निमित्तं ॥ ५३ ॥ हा (नेत्रश्च) पुञ्जकानां तथापह
 तचगर्हा ॥ यवसायास्मिकावृद्धिः ॥ समा (नेत्र) नविधाय
 तः ॥ ५४ ॥ ॐ गुह्यविषयावदा निमित्तं गुह्यं रुवाकू

५१
 १७

न निर्द्धा नित्यसत्त्वः ॥ निष्पन्नं मम त्वान ॥ ५५ ॥
 यावानर्थउदयानं सर्वं ॥ ५६ ॥ सर्वं तादृकं ॥ तावा स्तेष्व
 वंदेषु वाक्कृदास्यविज्ञानगः ॥ ५७ ॥ कर्म (नेत्र) वाधि
 कान्तं मारुलं वृकदावन ॥ माकर्मरुलं गुह्यं
 मातं (नेत्र) त्वकर्महि ॥ ५८ ॥ यावत्कृत्कर्म
 हि (नेत्र) एकाधनं कया सिद्धा ॥ ५९ ॥ समाहृत्या समः
 त्वया गतं यत्नः ॥ ६० ॥ दूतं वाक्कृत्कर्म वृद्धिः

२३

या नान्दुर्गया बुद्धौ नान्दुर्गया नान्दुर्गया कय ६॥ ४८ ॥ लहः
 नय ४॥ ४९ ॥ बुद्धि युक्ता नान्दुर्गया नान्दुर्गया ७८ ॥ ४९ ॥
 नान्दुर्गया नान्दुर्गया नान्दुर्गया नान्दुर्गया १०० ॥
 कर्मज बुद्धि युक्ता नान्दुर्गया नान्दुर्गया ४९ ॥ ४९ ॥
 वध विनिर्मुक्ता ४९ ॥ ४९ ॥ यदा नान्दुर्गया १०० ॥
 रुक्मिलि लु बुद्धि युक्ता नान्दुर्गया नान्दुर्गया १०० ॥
 वध विनिर्मुक्ता ४९ ॥ ४९ ॥ यदा नान्दुर्गया १०० ॥

नान्दुर्गया नान्दुर्गया नान्दुर्गया नान्दुर्गया १०० ॥
 रुक्मिलि लु बुद्धि युक्ता नान्दुर्गया नान्दुर्गया १०० ॥
 वध विनिर्मुक्ता ४९ ॥ ४९ ॥ यदा नान्दुर्गया १०० ॥
 रुक्मिलि लु बुद्धि युक्ता नान्दुर्गया नान्दुर्गया १०० ॥
 वध विनिर्मुक्ता ४९ ॥ ४९ ॥ यदा नान्दुर्गया १०० ॥

हृषीकेशनाग रुयक्राधः स्मितधाम्निनः ॥
 ॥ ५४ ॥ यः सर्वगानरिहं हं, कुरुत्यायुः पुरुषं
 । नाहिनन्दति न द्वेष्टि न ह्यपुञ्जायुतिष्ठिता ॥ ५५ ॥
 यदा संलुप्तं वायं, कूर्मः १ गमनाय सर्वदा ॥ पुं नृपि
 क्षी नृपि ॥ ५६ ॥ कुरुत्यायुः पुरुषं पुतिष्ठिता ॥ ५७ ॥ विषः
 याविनिवरुम्भ, निना हानस्य दहिनः ॥ न सर्वज्ञः
 साऽयस्य, यनं दृष्ट्वा निवरुम्भ ॥ ५८ ॥ यतना अयिके

१२

नय, पूज्यस्य वियम्बितः ॥ पुं नृपि ॥ पुमाथानि, ह
 रति युसहं मनः ॥ ५९ ॥ तानि सर्वाणि संयम्य, युक्तः
 आसीत् तमस्य नः ॥ ६० ॥ ब्रह्महि यस्य नृपि ॥ नृपि ॥ पुञ्जा
 पुतिष्ठिता ॥ ६१ ॥ अयं विषयार्थः सः ॥ संगं कुरुप
 जायते । संगं कुरुप जायते कामः ॥ कामात् ॥ अहिनाय
 तः ॥ ६२ ॥ काधद्वयनिर्माहः ॥ संभाहः ॥ तस्मिन् विजु
 मः ॥ तस्मिन् विजु ॥ अद्विना ॥ अद्विना ॥ अद्विना ॥ अद्विना ॥

॥

१२

सि ॥ ७ ॥ गत्या यस्य महाका हा नि गृहीतानि सर्व ॥ ८ ॥
 ॐ द्रिया दीन्द्रिया र्थस्य सुसुयु द्वा युनिष्ठिना ॥ ७ ॥
 यानि ॥ सर्वरूपा नां तस्यां जाग र्हि सं यमी । यस्यां जा
 ग र्मिरूपा नि सा नि ॥ य स्य ता मू न ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 सा द्वा भव ल यु निष्ठि, समुद्र माय ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
 कामा र्थ यु वि र्म ति सर्व, स र्म ति मा य्ना ति न कामे काः
 मी ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

एतद् ॥ निर्मम निवर्तकान् ॥ सन्ति मयि गच्छन्ति ॥ ११ ॥
 ७ वावाक्काहि ति ॥ यार्थ नै नां याया विमूक्त ति ॥ हित्वा
 स्याम गका लं ॥ यि वृद्ध निवर्तकान् ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥
 रुगवद्वा नास्तु यनि वस्तु वृद्ध विद्यायां या ग ॥ १४ ॥
 वृद्ध नर्तकान् ॥ सांख्यया ॥ नानाम हि नाथा ॥ १५ ॥
 ॥ ॥ अर्द्ध नर्तकान् ॥ ॥ अयसी च त्म हि ॥ मता वृद्धिर्द्ध
 नाद नर्तकान् ॥ कर्म हि धा नर्तकान् ॥ निशा कय सि क ॥ १६ ॥

२०

॥ व्या मि ॥ नैव वाक्का न वृद्धि मा हयसी वम ॥ नद कंच
 द निष्पि त्य यन ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥
 वाव ॥ ॥ ला कं मि नू हि वि धा निष्ठा वृत्ता या कामयाः
 नद्य ॥ ॥ नाना ॥ नाना र्था नां कर्म या ॥ नाना निर्ना
 ॥ १९ ॥ नकर्म ॥ नमना र्था नां कर्म या ॥ नाना निर्ना
 नव सन्या सना दव सिद्धि सम यि वृत्ति ॥ २० ॥ नहि क
 सिद्धि ॥ नमयि जातु निष्ठा एक कर्म कृत् ॥ का यार्थ नस्य

वनः कर्म सर्वं युक्तिर्ज्ञेः ॥ ५॥ कर्मनिध्याः
 हिसंयम्य यश्चास्ते मनसा स्मरन् ॥ ६॥ न्दियार्थं निमूढ
 सा मिथ्या चानः स उच्यते ॥ ७॥ यत्ति न्दिया हि मनः
 सा नियम्या नरुतेऽर्जुन ॥ कर्मयोगो न्दियेः कर्मयोगः ॥ ८॥
 मसकः स विनिवृत्तः ॥ ९॥ नियतं कृत्वा कर्म त्वं कर्मः
 कथा कर्म ह ॥ १०॥ गनीयया तु विवर्तते न पु सिद्धादक
 म् ह ॥ ११॥ यद्वा त्वं कर्म ॥ १२॥ न्यगु, ला कार्य कर्मव

२१

धनः नदर्थं कर्मको न यः सूक्तसंगः समाचर ॥ १३॥
 सह यद्वा युजा सद्वा युजा वाचयुजायति ॥ १४॥ अर्जन
 युसविष्यधः मयथा स्त्रियका मधूक ॥ १५॥ देवा द्वाव
 यता नन नेदवा रावय नुयः ॥ १६॥ यत्र स्यैव रावय न ॥ १७॥
 यः यत्र मवायुः ॥ १८॥ ॐ ह्यनू रा गान्ति वा देवा दा
 त्य न यद्वा राविता ॥ १९॥ मेदे रा नं पुंदा ये ह्यथा युं कृत्स्
 नः वस ॥ २०॥ यद्वा निवृत्ति नः संता, सूच्य न न यिः

किलिखे ॥ १३ ॥ अतः न तत्त्वार्थं वाचा यथार्थं व्यासकान्तम् ॥
 ॥ १३ ॥ अत्राहुवन्ति हूगानि, यथार्थं न्यादन्नसंख्य ॥ यद्वा
 हुवन्ति यथार्थं न्या ॥ यद्वा ॥ कर्मसिद्धय ॥ १४ ॥ कर्मवुः
 द्वाहुवन्ति विद्धि, यद्वा हुनसमूहव ॥ नस्मात्सर्वगतं व
 द्वा, निर्णयं यद्वा पुनिति निर्णय ॥ १५ ॥ अथ युवर्हिर्न वक्तुं नान्
 बह्वर्थात् ॥ १६ ॥ अथायं विद्विषाणां भाग्यार्थं वा
 सङ्गीवन्ति ॥ १७ ॥ यत्वा तन्निवन्ति नवस्या, दासहकि

२२

अथमानव ॥ १८ ॥ अस्मन्मन्वसं गुरु, सुखकार्यं न विदुः
 न ॥ १९ ॥ नैव तस्य कर्तुं ना, न कर्तुं न ह कश्चिः
 न। न चास्य सर्वरूपं, कश्चिदर्थं वा याग्य ॥ २० ॥
 नस्मादसकः ॥ २१ ॥ कर्म कर्मसमाचर ॥ अत्राहु
 अत्र कर्म, यत्र माध्यातियूय ॥ २२ ॥ कर्मलक्ष्यं
 वहिर्हसिद्धि, माहिगा जनकादय ॥ लाकसं गृहम्
 वायि, संयमं कर्तुं न हसि ॥ २३ ॥ यद्यदावन्ति (अ

ॐ निमत्वा नसकूतं ॥ २४ ॥ युक्तं गुहासंमूला ४ सज्जं
 नं गुहाकर्मसु ॥ तानकस्तु विदामंदा, नृत्तुवि
 न्नविवालयत ॥ २५ ॥ मयि सर्वाधिकस्मादि, सन्य
 स्याध्मात्मवतसा ॥ निजागान्निस्मभिरूला, यद्वाः
 स्वविगतकून ४ ॥ २६ ॥ यममनमिदंनित्यं, मन्त्रि
 वृत्तिमानवा ४ ॥ २७ ॥ यद्वावभाससूर्यभा, मन्त्रि
 यिकर्महि ४ ॥ २८ ॥ यत्वा नदस्यसूर्यभा, नान्त्रि

२४

निममर्त ॥ सर्वज्ञानविमूलाका, विद्विनक्षानव
 तस ४ ॥ २९ ॥ सदृशं वक्षतस्वस्या ४ युक्तगर्जनवा
 नयि। युक्तंनियानिरूतानि, निग्रह ४ किंकविष्ण
 नि ॥ ३० ॥ ॐ त्रियस्यत्रियस्या, र्थनागद्वेषीयवः
 स्त्रिती ॥ तथा नवममागद्वेषीयवः ॥
 ॥ ३१ ॥ ॐ यान्त्रधर्माविगुहा ४ यत्रधर्मास्त्रनृष्टिः
 तान्। स्वधर्मानिधनं ४ यत्रधर्मास्त्रनृष्टिः ४

॥१५॥ अर्जुन उवाच ॥ अथ कनय युक्ताय पापं व्रजति
 पुत्रस्य ॥ अनिच्छन्नपि वा शुभं वलादिव निश्चाकृतं ॥
 ॥१६॥ श्रीरुद्र उवाच ॥ काम उषका धनुषं तूष्णीं
 हस्मद्गुह्यं ॥ महात्मना महायाया विद्वानमिह वै नि
 र्णी ॥१७॥ धूमनात्रियं न वहि र्यथा दलं मलं न च ॥
 यत्थत्वेनावृता गरु रुधामं न दमवृत्तं ॥१८॥ श्री
 वृत्तं स्नानमनन स्नानिना नित्यं वै विद्वान् ॥ कामवृत्तं

२५

वृत्तं कथं यद्दृष्टं वृत्तं न लनव ॥१९॥ हुं ह्रि याक्षिम
 नावृद्धि न स्याधिष्ठानमयं न ॥२०॥ विष्णो हय एषः
 स्नानमावृत्त्यदहिर्ना ॥२१॥ न स्यात्स्नानिद्विधा व्यादो
 नियम्यरुवतर्षह ॥ यायानं युक्तं हि स्नानं ॥ स्नानविद्वान्
 न नात्मनः ॥२२॥ हुं ह्रि याक्षि यना ह्यं दू विनियस्य ॥
 यत्र मनः ॥ मनसस्तु यनावृद्धि र्यावृद्ध ॥ यत्र न मुसः
 ॥२३॥ उर्वरं वृद्धं यत्र वृद्धं सै रुत्या स्नानमात्मनः ॥

उद्दिगर्तुं महावाह, कामनूयं द्वा सदी ॥४३॥ ॥
 ॥ॐ निगिरुगवद्गीतासुयनिषत्सु बुद्धविद्यायां
 यागगन्धकुंजकृष्णनृसंवादकर्मशां (गमनाम
 रुगीथा ध्याय ४॥३॥ ॥ श्रीरुगवानुवाच ॥ॐ मं
 विवस्वतयागं प्राकवानहमव्ययी ॥ विवस्वा
 न्मनवप्राह मनूविष्वाकव इववा ॥१॥ ॥
 प्रवर्षयन्पनाप्राफ, निर्मनाजर्षया विदु ४॥:

२७

सकालनहमरुताया (गमन ४ परीतय ॥२॥ स
 प्रवार्यमयातय, याग ४ प्राक ४ पूनागन ४ ॥ रुका
 सिमं सखावतिनहस्यै क्षतदहमी ॥३॥ ॥ अर्क
 नउवाच ॥ ॥ अर्पयन् रुवताजन्म परीजन्मवि
 वस्वत ४ कथमंतदिजानीयां त्वमादौ प्राकवा
 निमि ॥४॥ ॥ श्रीरुगवानुवाच ॥ ॥ वदन्ति
 मव्यमीतानि जन्मानि तवयाईन, तान्यहं वदस

वर्णिनः नर्त्तकपर्वतप ॥५॥ अजा ५ पिसन्न वा या
त्मा रुताना मी ५ अजा ५ पिसन् ॥ प्रकृतिं स्वा मधि छा
य संरुवा म्या त्मा यया ॥६॥ यदा यदा हि धर्मस्य
ग्लानिर्भवति तावत् तदा अत्युत्तम धर्मस्य तदात्मा
नैव जायते ॥७॥ यत्रिग्राह्य साधुनी विना ५
यव य ५ कृत्वा धर्मसंस्कारपना र्थं य संरुवा मि
यूगयूग ॥८॥ जन्म कर्म व म दिवा म वी था व कि

तत्त्व ८ ॥ एका दहं पूनर्जन्म वे नि मा म ति सा ५
ज्जन् ॥२॥ वीत ना गरु य को धा म न्न या मा मू प
त्रि ता ८ ॥ वह वा दान ये तै सा पू ता म रु व मी ग ता
८ ॥१०॥ यय धनी प्रपश्यंती स एव रु जा म्य ही
मम वर्त्मान् व हं त म नू ष्या ८ पार्थ सर्व ८ ॥११॥
कां की त ८ कर्म क्षी सिद्धि य ज न पुं ह द व ता ८ कि
पुं हि मा नू ष ला क सिद्धि र्भव ति कर्म जा ॥१२॥

चातुर्वर्धमयाहृष्टं गुणकर्म विहागः ॥ १३ ॥ तस्य क
र्त्तव्यमपिमी विध्वक कर्त्तव्यमव्ययं ॥ १३ ॥ नमो कि
र्त्तव्यलिपिनिनमकर्मरुलस्य हा ॥ १४ ॥ तिमीया
इहिजानाति कर्मरिन्नसवधन ॥ १४ ॥ नववैज्ञानिक
लो कर्त्तव्यकर्म पूर्वत्रपि सुसूक्ति ॥ १५ ॥ कर्त्तव्यक
र्त्तव्यवगमात् पूर्व ॥ १५ ॥ पूर्वत्रपि कर्त्तव्य ॥ १५ ॥ किं क
र्त्तव्यमिदमकर्मति कवया ॥ १५ ॥ माहिता ॥ १५ ॥ त

रुक्मप्यवश्चामि यहात्वा मादस ॥ १६ ॥ राग ॥ १६ ॥
कर्म ॥ १६ ॥ अपि वादवी वादवी च वि कर्म ॥ १६ ॥ अ
कर्म ॥ १६ ॥ वादवी गहना कर्म ॥ १६ ॥ गति ॥ १६ ॥
कर्म ॥ १६ ॥ कर्मय ॥ १६ ॥ दकर्म ॥ १६ ॥ वकर्मय ॥ १६ ॥
वृद्धिमान्ननुष्य ॥ १६ ॥ सयूक्त ॥ १६ ॥ कर्त्तव्यकर्मकृत् ॥ १६ ॥
यस्य सर्वसमानं रा ॥ १६ ॥ कामसं कल्पवर्त्तिता ॥ १६ ॥
मिदं कर्म ॥ १६ ॥ नमाद्रु ॥ १६ ॥ यंतिर्नृप ॥ १६ ॥ ॥ १६ ॥

कृत्वा कर्मरुलासुं न निष्कृत्वा निनाशय ॥ कर्मरुहं हि
 यु ॥ वृत्ता इति नैव किंचित्क जातिरु ॥ १० ॥ निनाशः
 यत विरुत्ता ल्या कृत्वा सर्वय विग्रह ॥ ११ ॥ न नीन कवलं
 कर्म कृत्वा न्या न किंचित्क ॥ १२ ॥ यदृच्छा लारु सः
 नुष्ठा दं दाना ना विमत्सुन ॥ १३ ॥ समः सिद्धाव सिद्धौ च क
 त्या यिन निवधु न ॥ १४ ॥ गनसं गत्य मूक स्य ज्ञानं
 व किंचित्क न स ॥ यद्वा या वनन ॥ कर्म समं य वि

२२

लायन ॥ १५ ॥ वृत्ता य ई वृत्ता ह वि वृत्ता (ने) वृत्ता
 कर्म वृत्ता वं न न न न वी वृत्ता कर्म समाधिः
 ना ॥ १६ ॥ देव भवो य न यद्वा या गिन ॥ ययु पा स
 न ॥ वृत्ता ग्न यय न यद्वा ॥ यद्वा ने वा यद्वा कृति ॥ १७ ॥
 (ग्र) तादा निहिया ध्य न्य संयमानि वृत्ता कृति ॥ १८ ॥
 दा निषयान न्य वृत्ता निहिया नि वृत्ता कृति ॥ १९ ॥ सर्वा
 शास्त्रिय कर्मा हि या कर्मा हि वा यय ॥ २० ॥

यमया गमन्ने रुद्र गि श्चानदायित ॥ १० ॥ डव्ययः
 झाकया यद्वा यो न यद्वा रुथयन । झाध्वा यद्वा न
 यद्वा यत्तय ४ ॥ ११ ॥ हितवृता ॥ १२ ॥ अया न रुद्र
 गिया ही यु ॥ १३ ॥ याने तथ यन । यु ध्वा यान गतीन्
 ध्वा यु ध्वा याम यनाय ध्वा ॥ १४ ॥ अयन नियता हा
 ना ४ यु ध्वा न्या ॥ १५ ॥ रुद्र गि । सर्व ४ यु न यद्वा विधा य
 रुद्रु यित क लम्बा ४ ॥ १६ ॥ यद्वा निष्ठा मृतपुजा या

३०

भा ३

निवृद्ध सनातन । नायला का १ ॥ यद्वा स्य कृता न्यः
 ४ कृत् सुरुम ॥ १७ ॥ ७ व वद्वा वि ध्वा यद्वा विगता वद्वा
 ॥ १८ ॥ मृत्वा क मृत्वा विदिता सर्वा न वद्वा वि विद्वा
 ॥ १९ ॥ ८ या लु व्वा मया द्यद्वा द्वा न यद्वा यन गय ।
 सर्व क मृत्वा खिले यार्थ द्वा न य वि समा यत ॥ २० ॥ न
 दिदि यु वि याने न य वि यु ॥ २१ ॥ न स वया ॥ २२ ॥ उ य द रुः
 नि न रु नि न रु नि न रु ल द र्जिन ४ ॥ २३ ॥ यद्वा ला

नयनमाह, भवयास्यसियाधुव। यनरूता न्यस्य
 १३, उद्युस्यात्मन्यथमयि ॥ १५ ॥ अविचंदसि पाप
 यः सर्वस्य ४, सर्वस्य ४ पापकुरुम ४ ॥ सर्वज्ञानस्य
 वनेव, वृत्तिर्न संतविष्यसि ॥ १६ ॥ यत्पेधं सिसमि ३१
 डा २ मि, रुस्मसात्कुरुते २ कुन। ज्ञानान्नि ४ सर्व
 कर्माणि, रुस्मसात्कुरुते तथा ॥ १७ ॥ नहि ज्ञानेन
 सुदुर्ग, यवि तु मिह विद्यते। न ह्ययं याग संसि

३४, कालेनात्मनि विंदति ॥ १८ ॥ अद्वावानलरुतः
 ज्ञानं, तत्पुनः संयतं द्वियत ४ ॥ ज्ञानं लब्धो यथाः
 भूमि मचिप ४ ॥ यि गच्छति ॥ १९ ॥ अद्वावानलरुतः
 न च संनयात्मा विन भूमि ॥ नार्थं लाका इति नयथा
 न सुखं संनयात्मान ४ ॥ २० ॥ याग संनयात्मा कर्माणि
 ज्ञानं संवि न संनय ॥ अत्सर्वं न कर्माणि निवर्ध
 ति धर्मं जय ॥ २१ ॥ तस्मादज्ञानं संरुतं, दत्तं ज्ञाना

सिना लन ॥ ४ ॥ वि. ले न सं ग यी था ग, मा ति खों हा न ग।
 ॥ ४२ ॥ ॥ ॐ नि श्री रु ग व क्ता ना स य नि ष त्सु वु क्तः
 वि द्या र्था था ग म्भ मु श्री वृ क्त क्त न सं वा द सं न्या स या
 (ग म नाम चतु र्था २ ॥ य ४ ॥ ४ ॥ ॥ अ क्त न उ वा च ॥
 ॥ स न्या स क र्म धर्म कृ त्क, यून र्था गं व र्म स सि। य पुं य
 ५ त या च र्क, त न्म वृ हि स नि नि र्ति ॥ १ ॥ १ ॥ श्री रु ग
 वा न् वा च ॥ ॥ स न्या स ४ क र्म था ग म्भ, नि ४ ॥ य

३२

स क ना वृ ह्ण। न था मु क र्म स न्या स, क र्म था (ग म वि
 नि य त ॥ २ ॥ ॥ य ४ स नि ए स न्या स, था न दृ ष्टि न क्ति
 क ति। नि दं द्वा हि म हा वा हा, सु र्व व धा ल्यु म् वृ त्त ॥
 ॥ ३ ॥ स र्वा था (जे वृ थ ग्म ला ४ यु व द नि न र्प ति ना
 ४ ५ क म या सि न ४ स म्भ १ गु रु था वि न्द न रु ल ॥ ४ ॥
 य त्सा र्थ ४ ५ या य न रु न, त द्वा ले न यि ग म्भ त ॥ ५ ॥
 स र्वा व था ग ५, य ४ य ५ ५ नि स य म्भ ति ॥ ६ ॥

सन्धासम् महाबाहा द ४ ख माय मथागत ४॥ यागः
 युक्तामृतिवृक्ष नचिपक्ष विगतुति ॥७॥ यागयु
 क्तविष्णुदात्मा विजिनात्मा विमलिय ४॥ सर्वहृता
 सहजात्मा कृष्णविनलियार्ते ॥८॥ नेवकिं विः
 त्वापाति युक्तामृतिगतत्वविन् ॥ यन्मन्त्र ४५ः
 नृस्यमन्त्रिद्युम्नन्तं वृन्त्वपन्मन्त्र ॥९॥ पुल
 वन्विहृजन्मन्त्रमिहन्त्रिमिहन्त्रियि ॥१०॥ तिः

२३

या ॥ धीन्द्रियात्थेषु वरुन्तुंति धनयन् ॥११॥ युद्धः
 ध्या धयकमाहि सर्गं एका कथा नित्य ४॥ लियार्ते
 नस्याथन यद्ययन्मिवाह ॥१२॥ काथनमनसा
 वृद्धा कवलेविन्द्रियेन वि ॥ यागिन ४ कर्म कृष्णिः
 सर्गं एका सगुदय ॥१३॥ युक्ता कर्मरुलं एका
 मन्त्रिमाया किनेष्टिका ॥ नृयुक्ता कामकायैह रु
 लसका निवधन ॥१४॥ सर्वकमाहि मनसा सन्य

स्यात्सर्ववशा ॥ नवद्वययुनदहा नैवकुर्वन्नका
 नयन् ॥ १३ ॥ नकहृत्त्वनकमादि लोकस्यसुऊनि
 युतु ४ ॥ नकर्मरुलसंथागं लहा वमु प्रवहनं ॥ १४ ॥
 ॥ नादहृत् कस्यचित्पार्य नचैवसु कर्त विमु ४ ॥ अद्वा
 नना वृत्तंज्ञानं तनमूद्र किर्तनव ४ ॥ १५ ॥ ज्ञानननु
 नदंज्ञानं यथा नागितमात्मन ४ ॥ नयामादि सवद्वा
 नं युकाभयनितत्यनं ॥ १६ ॥ नद्वयसु दात्मनस्तु

३५

निष्ठास्त्यनाय ६ ॥ १७ ॥ गच्छ ह्ययुन नावृ हि ज्ञाननिः
 र्धनकलम ४ ॥ १८ ॥ विद्याविनयसंयत्तं बुद्धि ६
 गविहृत्तिनि ॥ १९ ॥ निर्वैवध्याकव यद्विना ४ सम
 दर्शिनं ॥ २० ॥ ॐ हे वनेर्द्धि न ४ सज्जं यथा सा भ्यः
 ह्मिर्नमन ४ निर्द्धावंहि समं बुद्धि नस्माद्वद्म दिने
 ह्मिना ४ ॥ २१ ॥ नपुद्गल्ययिर्यया या नाद्विज्जत्याया
 वायिर्य ॥ ह्मि नवृद्धि नसंमूढे बुद्धि ६ ह्मि न ॥ २२ ॥
 विबुद्ध

वाक् स्यात्संज्ञा सा, विदया त्वनियसूरी स
 बुद्ध्या गयू का सा सुखमदो यममन्त्र ॥ २१ ॥ य
 हि संस्यर्जिता हा गम, दुःखयानयड्युर्ग ॥ आ
 द्रुक् वक्तु ॥ कीर्तय, नतर्षु नमनवृध ॥ २२ ॥
 भुक्ता तीह वय ॥ सारु, प्राकलनीन विमा द्रुध
 न ॥ कामका (अहर्ववेगी, सयूक ॥ स सुखीन
 न ॥ २३ ॥ यान ॥ सुखा इकना नाम, सुथानक

३५

निप्रवय सयागी बुद्धनिर्वाही, बुद्धरुताधिगच्छ
 ति ॥ २४ ॥ लरुक्तं बुद्धनिर्वाही, मषय ॥ दीक्षकलम
 षा ॥ चिन्ने धयनात्मान ॥ सर्वरुतहितनना
 ॥ २५ ॥ कामका धवियू काना, यनाना यनवनसा
 । अहिना बुद्धनिर्वाही, वरुन विजिनात्मना ॥ २६ ॥
 स्यर्जकृत्वा वहिर्वाद्यां च दू (अंबान्ननपुवा ॥
 प्राधम्या नो सभो कृत्वा, नासाय ननचावि (हो ॥

स न्यासा, था गमरु सु दा य न ॥ ४ ॥ उद्ध व दा लना
 लान, ना लान म व सा द य न । आ ले व द्वा लना व धू,
 ना ले व वि यू ना लन ॥ ५ ॥ व धू ना लन लन लन
 य नो वा लना लना जि न ॥ ६ ॥ अ ना लन मु षा वृ ल व रू ना ३०
 ले व षा वृ व न ॥ ७ ॥ जि ना लन ॥ ८ ॥ यु षा न ल प न मा
 लना लना हि न ॥ ९ ॥ आ ना लु सु ख द ॥ १० ॥ वे वृ न थ मा
 ना य मा न था ॥ ११ ॥ न वि द्वा न ह फा लना कृ द ल

वि जि न द्वि य ॥ १२ ॥ य कृ णं तु य न था गा, सम ला षाः
 म का च न ॥ १३ ॥ सु द मि ना य द्वा लना म ध लु व
 व व धू । सा धू व वि च या थ वृ, सम वृ दि वि जि ष
 न ॥ १४ ॥ था ना यं कृ त स ग रं, मा लो न न ह सि लि न ॥
 उ का की य न वि लु लना नि ना ॥ १५ ॥ य वि गृ ह ॥ १६ ॥
 गु षो द ल यु ति षा य, सि न मा स न मा लन ॥ १७ ॥ ना लु दि
 त ना ति नी र्च वे ला जि न दू (म रु र्च ॥ १८ ॥ त र्च का र्च

मनः कृत्वा यत्नचिरं । न्दिय क्रिय ॥ ७ ॥ यविष्म सुन
 र्यं ॥ ११ ॥ गमात्मविष्टु द्य ॥ १२ ॥ सर्म काय निजा
 ग्रा वं धनय न्नचलं हि न ॥ १३ ॥ युष्म नासिका ग्रं लं
 दिम ॥ १४ ॥ नवला कयन् ॥ १५ ॥ युष्म नात्मा विग नही वु
 क्क वा त्रिवु न हि न ॥ १६ ॥ मनः स य म्म म चि रु । य क्क ॥
 हा न म ल्य न ॥ १७ ॥ र्यु क्क नै व सदा त्मानं था ना नि
 य न मा न स ॥ १८ ॥ नि नि वि ह य न मां । म ल्हा म धि
 न वु ति ॥ १९ ॥ ना ल्य न्न त मु था । न्म हि । नै व का न्न मन
 भूत

॥ नवानि स्रष्टु गालस्य । जा शुभा नै व वा क्क न ॥ १७ ॥
 युक्का हान विहानस्य । युक्क वं स्र स्य कर्म स । युक्क स्र
 प्रा वया धस्य । था न्म रुव ति द् ४ ख ह ॥ १८ ॥ यदा विनि
 यत्नं चिरं । मात्मन वाव निष्टु न । नित्य ह ४ सर्व का भ
 स्या । युक्क ४ लू च नै न द ॥ १९ ॥ य था द ॥ था निवा नै ल्हा
 न्म न्म न्म म मा स्र गा ॥ था नि भा य न चि रु स्य । युक्क न
 था ग मा स्र न ॥ १२ ॥ य ग्रा य न म न चि रु । नि वू द् य
 न स्र व या । य ग्रा य वा स्र ना त्मानं । य ग्रा ना त्म नि वु ष्यः

नि ॥ २० ॥ सुखमात्यनिकं यरु, दुद्धि ग्राम मगान्ति
 यं । थलियतु नञे वारं, स्तिन च लनिनलन ॥ २१ ॥
 यं लब्ध्वा वायनं लाहं, मन्यनं नाधिकं तन ॥ यस्मिं
 स्तिनो वद् ४ खेन गु वृक्ष विविचाल्यनं ॥ २२ ॥ नं वि ३२
 द्याद् ४ खेन था नं, विथा नं था ग संक्षि नं । सनि यथ
 नथा कथा, था जमनि वि धु व न सा ॥ २३ ॥ संकल्प
 यरुवा कामा, न्हा क्वा सर्वान जमन ॥ मनसः

वदिय ग्रामं, विनिम्य सर्मन ॥ २४ ॥ जने ४ जने
 प्रयनम, दुध्या धु कि गृहीतया । आत्म सं हं मन
 ४ कृत्वा, न किंचिदपि विनयन ॥ २५ ॥ यनायना
 नि सवति, मनस्य चलमस्ति नं । गन क्वा नि यम्य
 न, नै दात्म भव व र्ग नयन ॥ २६ ॥ युग्म न मनसं
 कर्न, था निनं सुखमूरुमं । उथे किं न न व क्वा व
 क्वा न म क लमर्ष ॥ २७ ॥ उवे यूक सीस्य सौ नं था ना
 नमस्य

विगतक लम्ब ४। सुखं न वृद्धं स एव, मर्त्यं तं सुख
 मं नृणं ॥ १७ ॥ सर्वरूपास्तु मां तानि, सर्वरूपा निवा
 सनि। हुं क्रीं नथा गय क्ता सा, सर्वगुणमदर्शन ४॥
 १८ ॥ आर्मा यन्मति सर्वगु, सर्वै मयि यन्मति।
 नस्याहं नयु हा म्मि, सर्वभ नयु हा म्मि ॥ १९ ॥
 सर्वरूपास्तु निथामां, रुद्रा कल्पमास्तु ४ सर्वः
 अवर्ह माययि, सथा गा मयि वरुण ॥ २० ॥ श्री

५०

यन्म न सर्वगु, समीय म्मि था ३ कून। सुखं वायदि, दुःखं
 सथा गा यन्मा मत ४ ॥ २१ ॥ ॥ अ कून न उवाच ॥ था यथा
 गत्यु याथा क ४ सा म्म नम धू सुदन। न स्याहं नयु
 म्मि, वचल त्या नू हि नि हि नी ॥ २२ ॥ वचल हि मः
 न ४ कू, पुमा यिवल वदुर्द। न स्याहं निगु हं मम्म
 वाथा निवसुदु कनी ॥ २३ ॥ श्रीरुगवानुवाच ॥ अर्ह
 यं महावाहा, ममाद निगु हं वल। अस्या सनगु कीः
 नय, येनाहं हाव नृ कून ॥ २४ ॥ अर्ह यनात्मनाः

या ॥ ८५ ॥ दू ८ याय ॐ मिम म मि ॥ व ॥ ८५ ॥ तना मु य न
 ता ॥ ८५ ॥ वा य मु या य न ॥ ३६ ॥ ॥ अ ई न उ वा च ॥
 अ य नि ॥ ८५ ॥ आ य नो आ ग म वु लि न मा न स ॥ अ य
 या या ग स सि दि की ग नि कृ ष्ण ग वु नि ॥ ३७ ॥ क वि
 नो र य वि उ ष ॥ वि नो उ मि व न ॥ अ य नि ॥ अ य नि ॥
 ॥ ८५ ॥ महा वा हा वि मू षा व द्म ॥ ८५ ॥ य धि ॥ ३८ ॥ ८५
 म स ग य कृ ष्ण कृ ष्ण म ह स्य ॥ ८५ ॥ य न ॥ ८५ ॥ य द न्य ॥
 स ग य स्य ॥ ८५ ॥ ल न द्म य य द न ॥ ३९ ॥ ॥

५१

॥ ८५ ॥ रा ह ग वा नू वा य ॥ ॥ यार्थ भे व ह ना मू ण वि ना ॥ ८५ ॥
 स्य वि द्य न ॥ न हि क ल्या ॥ कृ त्वा षि ॥ दू ष नि ना न ग
 वु नि ॥ ४० ॥ या य यू ष्य कृ णा ला का नू षि त्वा ॥ ८५ ॥
 ना ॥ ८५ ॥ ८५ ॥ पु ची नां ८५ ॥ म र्गा ८५ ॥ रा ह या ग उ ष ॥ ८५ ॥
 य न ॥ ४१ ॥ अ थ दा या नि ना भ व कृ लें स ह नि धा
 म र्गा ॥ ८५ ॥ अ त दि दू ष र ह न व ला क र न म य दा दृ ष ॥
 ॥ ४२ ॥ ग ग नी वृ दि स या ग ल र न यू व द हि र्क ॥

यमनचनगरुय ४ संसिडो कुवनंदन ॥ ४३ ॥ यूवा
 ह्यासननमेव, द्वियनं द्रव ॥ ४४ ॥ दिस ॥ जिह्वा सु
 नयिथा गस्य, गवे वुक्का निवर्तन ॥ ४५ ॥ युयनंद
 नमानमु, यागा संशुद्ध किलिष ॥ ४६ ॥ ननकडनमं
 सिद्धि, सुभाया नियनं गति ॥ ४७ ॥ ॥ कं वीय ॥
 ॥ गय सिद्धा ॥ चिका यागा, आनि ह्या ॥ यिमना ॥ चि
 क ॥ कर्मि ह्य ॥ चिका यागा, गस्मा यागा हवर्त

४२

न ॥ ४८ ॥ यागिनामयि सर्वेषां मङ्गलं नानकनाम
 नि ॥ ४९ ॥ वाहू ठं थामं सभ यूकन भामन ॥
 ॥ ५० ॥ ॥ ॐ ति श्री रु ग वरू गाना सुय निषत्तुव
 द्रविद्यायां यागममं कुं धी कृष्ण कूं न संवादेनः
 लसं यमथा ॥ ५१ ॥ नाम, षष्ठा ध्याय ॥ ५२ ॥ ॥
 ॥ श्री रु ग वानू वार ॥ ॥ मया सुकमना ॥ यार्थ यागं य
 कनमदागुय ॥ ५३ ॥ मूं गयं समगूं मां यथ स्नास्यसि

गच्छेद्गु॥१॥ज्ञानं गच्छेत्सर्वविज्ञानं मिदं वदन्त्याम्य (१॥
 यतः । यद्वा त्वानं हुरुथा न न्यद्वा त्वमव निष्पन्नं
 ॥२॥ मन्त्राणां सारं प्रवृत्तं कश्चिद्यतनि सिद्धये ॥
 यतनामपि सिद्धानां कश्चिन्मात्रं हि न त्वत्त ॥
 ॥३॥ ह्रिमिनां यो न लावायुः सर्वमभावद्विषयव
 । अहंकारं तु नयं भूतिनाः प्रकृतिवत्तु ॥
 ॥४॥ अथ यमि ति ह्रिम्यां प्रकृतिं विद्धि भयना

४३

। जीवतु नाम महाबाहो ययदध्यायं न कृणु ॥ ५ ॥
 उत शान्तिं निरुक्तानि सर्वानि यथा नय । अहंकारः
 त्वस्य कृणु ॥ ६ ॥ यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु ॥ ७ ॥ मरुतः
 वतर्नान्य किं विदस्ति धनं कृत्य । मयि सर्वं मिदं
 धारुणं सुखं महि गच्छेत्तु व ॥ ८ ॥ न साह भयसूक्तो
 नय यत्तु सिद्धिं सुखं यथा ॥ ९ ॥ यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
 यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु ॥ १० ॥ यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
 यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु ॥ ११ ॥ जीवन् सर्वं त्वत्तु यत्तु

अस्मिन्मयस्त्रिषू ॥ १० ॥ वीर्यं सर्वरूपाणां विद्धि
 वार्धसुनागर्नं । वृद्धिर्वृद्धिमनामस्मिन्कुरु कुरु
 भाभे ॥ १० ॥ वलं वलवर्णं वाहं कामनागविव
 र्जितं । धर्माविबुद्धाहर्नषू, कामास्मिहर्नतर्बह ॥
 ॥ ११ ॥ यथैवसास्त्रिकारुवा, नाकसास्त्रासम्पद्य
 । मरुत्तवर्तिगास्त्रिद्धि, नलहर्नषूतयिम ॥ १२ ॥ ति
 रिगुर्दामयेरुवे, नरि ४ सर्वमिदं कुरु नू । भाहि
 तं नाहि कुरुनाति, माभेह्य ४ यनभयार्थ ॥ १३ ॥ दि

५५

वार्धं वा गुह्यमया, मममायाद्वनह्यया । माभय
 यययद्यं न, मायासर्गं नर्ननिर्न ॥ १४ ॥ नमार्द्र
 ४ कुरुतिनामरु ४ यययद्यं न नवाधमा ४ मायया
 यद्वनह्यना, आसुर्वरावमाग्निना ४ ॥ १५ ॥ वगुर्वि
 धरुनर्नमार्, कुरु ४ सुकुरुनिभा ४ कुरुन । आहर्जि
 ह्यसुत्रार्थार्थ, ह्यनावहर्नतर्बह ॥ १६ ॥ निवाह्य
 नानिह्ययुक्त, एकरुक्किर्विनिष्यनं । प्रियाह्यह्य

निभाइत्यर्थं महं सचममयि य ॥ १७ ॥ उदाया ॥ स
 वं जयेनं ज्ञानात्वे लो वममनं । अहिता ॥ स हि य
 कात्मा । मामवान् रुमांगमि ॥ १८ ॥ वदूनां कन
 नामनं ज्ञानवान्मायुयद्यनं । वासुदव ॥ स व मि
 नि समहात्मा स दुर्लभ ॥ १९ ॥ कामे लो लो दनः
 ज्ञाना ॥ युयद्यनं न्यदवता ॥ ननं नियममास्त्रायः
 युक्त्या नियता ॥ स या ॥ २० ॥ आशायी यीननं

५५

कः ॥ अर्द्धयां विरु मिदुति ॥ न स्य न स्या चलां शुद्धीता
 भवविदधममहं ॥ २१ ॥ एनया शुद्ध वायुका सुखा
 राधनमीहनाल हनवगत ॥ कामा नयेवविः
 हिताहितानं ॥ २२ ॥ अंतवगु रुलं न वां नह
 वल्यल्यभ धर्मा । दवा नैवय आयांति महका
 यांति मामयि ॥ २३ ॥ अथ कं यकि मायनं मेयनं
 माम वृद्धय ॥ वनं हा वमकु न ना ममा यं यमन

हि २

रुम ॥ २४ ॥ नाहं पुका ४ सर्वस्य यागमायासमा
 दृत ४। मूराय नाहि जानाति ला कामा मऊमवः
 य ॥ २५ ॥ वेदाहं समगीतानि वहमानानि चार्क
 न। रुवि व्याधि चरुतानि मां तु वेदन कश्चन ॥ ४
 ॥ २६ ॥ ॐ चूढ वसमूक्तं न द्विदभाह न हावत। स
 वरुतानि सभाहं स (म) यानि यव गय ॥ २७ ॥ य
 वी लं ग ग तीयाय ऊ नाना य ह्य कर्म क्षी। नद्व

४६

दभाह नि मू का रुज न मां दुरुवना ४ ॥ २८ ॥ अथाभव
 हाभाकाय मासां प्रिययनं तिथि। नैव द्रुत दिदु ४ कल्ल
 म ध्म लं कर्म चारि ली ॥ २९ ॥ साधि रूता विदेव मां
 साधियमं चय विदु ४। युया हा काल इयिय मां न वि
 द्यु क् च ग स ४ ॥ ३० ॥ ॥ ॐ ति श्री रु ग व क्षी ता सु
 यनि षत्सु वृक्ष विद्यायां याग गम मु श्री कृष्ण कृष्ण
 स वाद नान विज्ञान याग नाम स य मा ध्म य ४ ॥ ३१ ॥

॥ अंरुनउवाच ॥ ॥ किं ननु ब्रह्म किं मध्यमं किं कर्म
 पुनरुवाच ॥ अधिरुतं च किं याक मधिदेव किं
 वृत्तं ॥ १ ॥ अधियज्ञः कथं कागु दहं सिमधुसूद
 न। युयानकालचकथं ॥ २ ॥ सिनियगासहि
 ॥ ३ ॥ गृहगवान्वाच ॥ ॥ अद्वैतं वृत्तं यनमं च
 राधा ॥ ४ ॥ समुच्चयं ॥ ५ ॥ रुत राधा इव कथा विसर्ज
 ८ कर्म संहि न ॥ ६ ॥ १ ॥ अधिरुतं कथा राव ८ पुनरु

५१

अधिदेवती। अधियज्ञाहमवागु दह दह रुतं
 यन ॥ ७ ॥ ॥ नका लचामाभव समनं का कलेवनं
 । य ८ युयानि समुच्चयं यातिना स्यागु सगय ८ ॥
 ॥ ९ ॥ ययं वापि समनं नो वं एत नु न कलेवनं
 । नतमं वै नित्यं न य सदान्ताव हाविन ८ ॥ १० ॥
 स्मा सर्व वृत्ता लं सु सामनू स वयु द्वा व। मप्रधि
 नमभा बुद्धि मभिधे या ल सगय ८ ॥ ११ ॥ अथा सथा

गयूकू न तं तस्य ना न्य गमिना। यत्र मं यत्र वं दि
 वं याति या र्थं नू वि तयन् ॥८॥ कवि यूना दामन
 सा सिता व मना व द्या यां स म नू स न द्य ॥९॥ सर्व स्यः
 धा ना व म वि ह्य नू य मा दि ह्य व र्धु त म स ॥१०॥ यत्रः
 स्तान् ॥११॥ युया द का ल मन सा च ल न रु द्धा यू क
 या न व ल न च व । यु या र्म (ध) या द मा व र्ध स म्यः
 कृ तं य नं य नू ष म् ये ति दि वी ॥१०॥ यद क र्त्त व द

२८

विद्या वद नि विद्य तया वा त ना गम ॥८॥ यदा चू का उ द्भ
 य र्थं च रं ति, त रु य दं सं गृ ह्ण न यु व द्भ ॥११॥ सर्व
 दाना हि सं य म्य म ना द दि नि व र्ध व । मू द्भ्यां ध या
 ल न ॥१२॥ मा हि नो या ग धा न ही ॥१३॥ मि र्थ
 का क र्त्त व द्भ या ह न मा म नू स न नू । य ॥ यु या तिः
 ल उ न्द हं स यो ति य न मी ग ति ॥१३॥ अ न न्य वं ता
 ॥१४॥ या मा स न ति नि ह्य ॥१५॥ न स्या दं स ल

रु० यार्थं नित्यं कृत्वा या निन ॥ १५ ॥ मामूयं त्वयूः
 न कृत्वा दू० खालयम ॥ १६ ॥ या पूर्वं तिमहासा
 न० संसिद्धिं यनमां गिता ॥ १७ ॥ आबुद्धं दुवना
 लोका० यूननावरुिना ॥ १८ ॥ मामूयं त्वयूः कौन
 य यूनकृन्मनविद्यन ॥ १९ ॥ सहस्रयूगयय्यं कः ॥ २० ॥
 महयं दुद्धं ॥ २१ ॥ विदुः ॥ २२ ॥ यागि यून सहस्रं गीतं ॥ २३ ॥
 हा नागु विद्या न ना ॥ २४ ॥ अवाका द्वा कृय ० सर्वा

० पुरुषं त्वहना गभा नाग्रा गभयुलीयं न केमेवा वा
 कृसीद्धं कः ॥ २५ ॥ ह न गभम ० स न वां यं त्वत्वा रुत्वा य
 लीयते । नाग्रा गभ इव ० ॥ २६ ॥ यार्थं पुरुषं त्वहना गभ
 ॥ २७ ॥ यनस्तु सानु हा वा ॥ २८ ॥ या कः ॥ २९ ॥ अवाका सुनाग
 न ० ॥ ३० ॥ य ० सर्वं वृत्तं न वृत्तं न विन ० ॥ ३१ ॥
 अवाका ॥ ३२ ॥ न वृत्तं त्वत्वा सुमा द्वा ० यन मा गीति ॥ ३३ ॥
 याग्रान निवर्तकं न द्वा मय न मं मम ॥ ३४ ॥ यूनव

४सयन ४यार्थ, रुक्मा लस्य ल्यन न्यया। यस्यान ल्का निरु
 ना नि य न सर्व मिर्द नर्न ॥ २२ ॥ यतु काल ल्यना वृत्ति
 मा वृत्ति ये वया नि न ४। युया नाया तिर्त काल वद्व
 मिह न न बरु ॥ २३ ॥ अग्नि ॥ ३३ ॥ नि न ह ४ ५ ६ ७ ८
 वद्व सा उ रु ना य र्ण। ननु युया ना ग च्छ नि, वद्वः
 वद्व विदा जना ४ ॥ २४ ॥ धूमा ना गि सु थ कृष्ण ४ वः
 द्मा सा द कि द्मा यर्न ॥ ननु चानु मर्सी आ ति, यो गा या

५०

यु निव र्ण न ॥ २५ ॥ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

नास्त्ययनिषत्सुवद्म विद्यायां या गन्मस्तु श्रीकृष्णार्क
 नसंवाद अक्षयवद्म यागनामा अक्षुभाध्याय ४॥२॥
 ॥॥ श्रीरुगवान्वाच ॥ ॥ ॐ देवुर्न गुद्वनमं यवद्व क
 आम्भनसूयवाऽन्नानं विद्वानमहिर्न यद्व लाभा
 स३गुरुत् ॥१॥ नाज विद्यानाज गुद्व यवित्रुमिद
 मूरुमं । युत्यकावगमं धर्मं सुसखं कुरुमं वार्य
 ॥२॥ अष्टदधना ४ यूयवा ४ धर्मस्यास्य परं तय ।

अष्टा यमनिर्वर्तनं नृत्त्यं संपादयत्सु नि ॥३॥ म
 यागतमिदं सर्वं जगदवाक्यं मूर्तिना । मत्सु नि
 सर्वहृतानि नराहं नृषवस्त्रि ४॥४॥ नचमत्सु
 निहृतानि यश्चमयागमे ४॥५॥ नृनह नचहृ
 त्वा ममात्मा नृनरावन ४॥६॥ यथा कागस्त्रि
 निर्य वायु ४ सर्वत्र ४ ममहात् । तथा सर्वादिह
 नानि मत्सु नीत्ययध्वनय ॥७॥ सर्वहृतानि को

भय प्रकृति या निमामिकां ॥ कल्यक्षय यूनस्तानिः
 कल्यादेवि सजाम्यहं ॥ १॥ प्रकृति स्वामवद्वस्यवि
 सजामि यून ३ यून ४। हन गम मिर्म कस्त भवर्ग्यु
 कर्ण वृत्ति ॥ ५॥ नवमं गानि कर्माणि निवधुं नि
 धनं कय। उदासीनवदासीन मग कीर्णं वृत्तम्
 ॥ ६॥ मया धर्मे ६। प्रकृति ४। सूर्यर्णं सवनावन
 । हनु नानन को भय, जगद्विषय निवहर्ण ॥ १०॥

५३

अवजान निमं मूरा मान्वात नूमा प्रिती। यन,
 रावमजानीना ममरुत मह एवर् ॥ ११॥ भाद्याम्
 भाद्य कर्मा ६६। भाद्यज्ञान विचनस ४। नाकु सीसा
 सूनी च व, प्रकृति भादिनी प्रिती ४॥ १२॥ महा।
 त्मानमुमीयार्थ देवी प्रकृति मा प्रिती ४॥ रुज नू
 नन्यमनसा ह्या ह्या रुतादि मया यम् ॥ १३॥ सनर्त
 कीरुय भासा यर्ज न ४६ दूरवता ४। नमस्य गय

मरिहू निहयूका उवा सन ॥ १५ ॥ सानयय
 नवा यो नो यमं ता मां उवा सन । उक लं न यथ
 कृ न वद ध वि नो मरु ॥ १५ ॥ अहं कृ नु नहं
 य ४ ४ ख ध ह म ह मो य धी । म कृ ह म ह भ वा ५ ५३
 म ह म नि न हं कृ न ॥ १६ ॥ यि ता म ह स्यं कृ ग ता मा
 ना ध ता यि ता म ह ४ । व द्यं य वि नु भा का न अ कृ ताः
 म य कृ न व च ॥ १७ ॥ ग नि र हं य ४ ४ सा की नि वा स

४ म न हं कृ ह न । य ४ ४ य ल य कृ न । नि ध न
 वा क म य य ॥ १८ ॥ ग या म ह म हं व र्थ नि गृ कृ
 म्पू ल कृ मि वा । अ म नं व व म ल य ४ ४ स द स वाः
 ह म कृ न ॥ १९ ॥ नि वि द्या मां सा म या ४ ४ न या या
 य ४ ४ वि द्या स र्ज नि या र्थ य भा न य ४ ४ मा सा य स
 य ४ ४ ला क म ४ ४ नि दि या दि वि द व र्ता म नू ॥
 ॥ २० ॥ ग नं गु कृ स र्ज ला क वि ग म ल की ४ ४ य

(द्वयमहर्षिणा कविर्गतिः। उर्वरुया धर्ममनूययना
 गता गते कामकामालर्हन् ॥ २१ ॥ अनन्या स्थित
 यथा मां यज्जना ४ यय्यया स नृणां नित्यादिभूका
 ना। या गच्छे स व हाम्य ह ॥ २२ ॥ य इय न्यदवताः
 रुका यज्ज नृणां दया नित्या ४ न विमामवकीक
 य यज्ज नृणां विधिपूर्वक ॥ २३ ॥ अहं हि सर्वयज्ञाः
 नां हा का वयुधुनवव। ननु मामहि जाननि नः

खना नृणां वीरिण ॥ २४ ॥ यान्ति द वृषणादवा
 न्ति ह नृणां नित्यिह वृणा ४ ह नृणां नृणां नित्यिह
 भा इयिमां ॥ २५ ॥ यज्ज नृणां वृणां नृणां नृणां
 यय्यवृति। नदहं रुक्म यद्वन मन्ममियुयगा
 ल न ४ ॥ २६ ॥ यत्क नृणां विदग्ध सि यज्ञ हा विद
 दासियत्। यत्क यत्क सि की नृणां नृणां नृणां
 ४ ॥ २७ ॥ गुरुगुरु रुहं नृणां नृणां नृणां

ने॥ सन्यासयागयुक्तात्मा विमुक्ता मास्ये ष्यसि ॥४॥
 २८॥ सभा इह सर्वरुतषूनमद्वष्टा इति न प्रिय
 ४॥ यरुजं निचमीरुक्ता मयिनं न षूचा यदहं ॥
 २९॥ अयिचत्सुदनाचा नारुज न मा मनन्यरा
 क्। साधूनवसर्मनवा ४ सम्यग्विवसिताहिताः
 स ४॥ ३०॥ किप्रवति धर्मात्मा ॥ ४॥ च्छां नि नियचु
 ति । को न यप्रतिजानी हिन भरुक ४ प्रहास्यः

ति॥३१॥मीहियार्थव्यापश्चित्ययइषिस्यू४पाप
थानय४।लुयावेभ्वास्तथा४२दास्तधिर्यानिः
यनीगतिं॥३२॥किंपूनबुद्धिद्वय४५६७रुका
नाजर्षयस्तथा४८नित्यमसूरवलोकमिमेषा
प्ररुजस्वमां॥३३॥सन्मनारुवमरुका मशाली
मानमस्कृनु४माभवेष्टासिपूर्वैवमानंमत्यस्ता
नायद्य४॥३४॥ॐ तिष्ठारुगावङ्गीनां सुपनि

षत्सुवक्ष विद्यायीथाग ॥ १ ॥ मुग्धावृष्टा न संवाद
 नाज विद्याना जगुक्ष थो ॥ गमना मनव भाधाय ॥
 ॥ १ ॥ रुगवानूवाच ॥ ॥ रुयनुवमहावाहा ॥ १ ॥
 मय नर्मवय ॥ यलुहं प्रियमाधाय वक्षामि
 हितकाम्यया ॥ १ ॥ नम विदु ॥ सुनग ॥ १ ॥ पुरुव
 नमरुषय ॥ १ ॥ अरुमादिहिदवानी महर्षी ॥ १ ॥
 सर्व ॥ १ ॥ २ ॥ थामासुजमना दिव वरिलोकम

३५

ह ॥ १ ॥ न ॥ अरुसमूरु ॥ समथषू सर्वपाथे ॥ प्रमूया
 न ॥ ३ ॥ वृद्धिर्नमसंभाह ॥ कमासर्गमद ॥
 ॥ १ ॥ म ॥ सरवीदु ॥ र्वरुवा रुवा रुयं चारुय
 मवय ॥ ४ ॥ अहि सासमना कु सि सुयादानय
 ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ रुवनि रुवतु नानी मरु ॥ १ ॥ यय
 थनिध ॥ १ ॥ १ ॥ मरुषय ॥ सुकयू व यत्नाथाम
 नवकु ॥ १ ॥ मरुवा मानसा याता य वीलाक ॥ १ ॥

मा ४ यं ऊ ४॥ ६॥ न विरु निं थानं व समथा वहि
 न लन ४। सा वि की यं नथा (गन यू अं न ना नृ सः
 न य ४॥ ७॥ अहं सर्वस्य पुरुषा मह ४ सर्वं पु वरु
 नं । ॐ नि मत्या रु ऊं न मां पु धा हा व स म नि ना ४
 ॥ ८॥ म वि हाम ऊ न या हाम वा ध य न ४ य न स्य
 रं । क थ यं न न मां नि ह्यं गु र्वा नि व न म ति च
 ॥ ९॥ न र्वा स न न यू का ना रु ऊ नां पु ति यू व

कं । द दामि वृ द्धि या नं नं य न मा मू य यां नि नं ॥ १०॥ :
 न वा म वा नू कं या र्थ मं ह म ऊ न ऊ न म ४। ना म या
 म्मा ल हा व ह्म न दा यं हा हा ल ना ॥ ११॥ अ ऊ न उ
 वा य ॥ ॥ य नं तु द्म य नं ध म य वि नुं य न मं रु वा न् ।
 पु न् र्बं म म नं दि या मा दि द वं म ऊ वि नुं ॥ १२॥ आ रु
 ल्म मृ ष य ४ स वं द वं वि न्ना न द रु था । अ सि ना द
 व ला या स ल य रं व वृ वा वि मा ॥ १३॥ सर्व भ न दः

नमः यन्मां वदसि कं भव । न हिनरु गवन्वा किं वि
 दुर्दवाने दानवा ॥ १४ ॥ स्वयम् वात्मना त्मानं व
 ह्नुत्वं पूज्यो रुम । हनरा वनरु नैः । देवदेवजु ग
 त्यन ॥ १५ ॥ वकु महस्य ॥ १६ ॥ दिवा द्वा लविह
 नय ॥ १७ ॥ यारि विह निरिह्ना का निर्मा म्वा यानिः
 सुसि ॥ १८ ॥ कथं विद्या महया गि त्वा सदा यनि
 चि नयन् ॥ कष्क व्चरा व व्, चिन्वा ५ सिरुग

५६

वत्मया ॥ १९ ॥ विह्न न दम त्माया गं विह्न निचऊ
 नाद न । ह्वय ४ कथय ह्वि हि ५८ ह्वना नास्मि भ ३
 मर्त ॥ १६ ॥ ॥ गी हगवान् याव ॥ हिनन कथयि
 यामि दिवा द्वा लविह्न तय ४ । प्रा क्ष न्यन ४ क्वः
 ॥ ४ ॥ नास्तीति विह्न न सभां अह मात्मा गुण कः
 ॥ सर्व ह्ना सय ह्वि न ४ । अह मादि ज्य मर्ध च ह्वः
 ताना म् नैः वच ॥ २० ॥ आदि याना मह विष्णु अ
 कि यानि विर्न गुमान् । मनी विर्मन्ता मस्मि

॥ नकुगु हाममहंममी ॥ २१ ॥ वदानी सामवदा सिद्ध्या
नाममि वासवः ॥ २२ ॥ नुदिया हाममनः सिद्धि वनना
॥ २३ ॥ नुदा हाममं कनः सिद्धि विरु (म) यकन क
सी । वसुनां यावकः सिद्धि भवः निखनि हाममहं ॥
॥ २४ ॥ यूना धर्मा यमूर्खी मा विद्धि यार्थ वृहस्पति ।
सनानी नामहं ह्यन्दः सनसामसि सागनः ॥ २५ ॥
महर्षी हामरु गुनहं गिनामसि कर्मकर्त्री । यद्वा

५२

हि

नीकयजुः ॥ २६ ॥ सिद्धि ह्यवना हामहिमालयः ॥ २७ ॥
॥ अथ ह्यः सर्ववृक्षा हामदवर्षी हामवनानदः ॥ २८ ॥
धर्वा हामविगुनधः ॥ २९ ॥ सिद्धा नां कयिलामुनिः ॥ ३० ॥
उच्चैः ॥ ३१ ॥ वसुभज्यनी विद्धि माममृताहर्षी । नेनाव
नीगकुन्द्या हामनना हामवननाधियमू ॥ ३२ ॥ अथ य
हामनामहं वदुः ॥ ३३ ॥ नूनामसि कामधूक् । युजनः
सिद्धिदयः ॥ ३४ ॥ स्या हाममसि वासुकिः ॥ ३५ ॥ अनक

अस्मिन्नागमनां वन ८६॥ यादस्तामहं ॥ विहृष्टमस्य
 मं अस्मिन् यम ४ संयमनामहं ॥ २७ ॥ युक्तादस्मिन्
 त्यानां कालयनामहं ॥ मगनां वम ८७ ॥ अहं येन न
 यश्चयं हि हं ॥ ३० ॥ यवन ४ युवनामस्मिन्नाम ४ ममु ८८
 ननामहं ॥ अवाहं मकन अस्मिन्नाम ४ मसिजा
 द्वा ॥ ३१ ॥ सग्न ४ मादिन नश्च मध्वं वाहमः
 कून ॥ अश्वात्मविद्याविद्यानां वाद ४ युवदनामहं

॥ ३२ ॥ अहं नाहमकाशास्मिन् द्वि ४ सामासिकस्यवा
 । अहं भवाक्य ४ काला ५ ताहं वि ७ ना मूरव ४ ३३ ॥
 । मत् ४ सर्वहन अहं मद्रव अहं विद्यानां ॥ कीर्ति
 ४ श्रीवक्ति नानी हं स्मृतिर्भक्ष धृति ४ क्रमा ॥ ३४ ॥
 वृहत्सामन थ साम्रां गयती बुन्द सामहं । मासाः
 नां मार्जना वा इह मरुनां कुसुमा कन ४ ३५ ॥
 ॥ ३६ ॥ वधानां यव अस्मिन्नाम ४ ना मसि कविनी । सर्व

वीं हृदा जाती नां दहा हं या धुन नदन ॥ द्युर्न बुल यना
मस्ति नं ऊरु ऊरु ह्वि नाम हं । ऊं या स्मि य वे सा था इस्मि,
सर्वे सर्व वनाम हं ॥ ३६ ॥ वृषू नां वासु दया इस्मि या
धु वानां धन ऊय ॥ मूनी नाम या हं वासु ८ कवीना ५१
मूला ना ८ क वि ८ ॥ ३७ ॥ द८ धु दम यना मस्ति ना ति व
स्मि जि ना यती । मो नं ये वा स्मि गु द्धानां, छा नं छा न व
ताम हं ॥ ३८ ॥ यदा पि सर्व रूता नां, वी ऊं न दं ह म ऊं

न । न न दस्ति वि ना य स्मा, स्म या रूनी च ना व रं ॥ ३९ ॥
नां ना इ स्मि म म दि द्या नां, वि रूता नां य रं न य । ७
बहु दं म न ८ या क्ता, वि रूत वि स्मि नाम या ॥ ४० ॥
यद्य दि रू ति म स्म र्त्त, श्री म दू किं न व र । न रू द या
व ग बु र्त्त, म म नं ऊ ५ म र्त्त र्वं ॥ ४१ ॥ अ थ वा व द्द
ने न न किं रू न न न वा क्ता । वि रू त्या रू मि दं क
स्म, न क्ता म न स्मि ता ऊ ग न् ॥ ४२ ॥ ॥ ॐ ति श्री

रुग्णवङ्गीनासुयनिवत्सुवृक्षविद्यायांथागमभक्तु
 शीकृष्णकूनसंवादविहृनिथाऽगमनामदभमो
 ध्याय४॥१०॥ ॥ अकूनउवाच ॥ ॥ मदनुग्रहायय
 नमः शुद्धमध्यात्मसंस्मृतिं । यत्त्वया कं वचस्मिन्मा ७२
 हायं विगतामम ॥ १ ॥ रुवाययौ हि रूतानां शुनी
 विस्तृतऽगमया ॥ त्वरु४ कमलयाग्रादमाहात्म्यम
 पिवाक्यं ॥ २ ॥ ७ वमनद्यथा त्वत्मा नयनम

७४ ॥ ७४ ॥ ७४ ॥ ७४ ॥ ७४ ॥ ७४ ॥ ७४ ॥ ७४ ॥ ७४ ॥ ७४ ॥
 मन्त्रास्यदिनकृष्णमयादुष्टमिनिपुष्टा । थाऽगम
 ननमाभर्त्तुदभ्यासानमयेयं ॥ ४ ॥ ॥ श्रीरुग्ण
 वानुवाच ॥ ॥ यथ्यभयार्थरूयादिजनऽगमथसह
 मुग्ण४ ॥ नानाविधनिदियानि नानावर्द्धकृर्णनिच
 ॥ ५ ॥ ॥ यथ्यादित्यान्वसूडा नन्विनेमन्त्रनस्तथा
 । वदन्त्यदुष्टवृष्टादि यथ्याथ्यादिरुनना ॥ ६ ॥ ७

हे कर्तुं जगत्कृत्स्नं यथा द्रष्टव्यं तद्वत् । मम दहः
 गुणकं यद्वा न्युदुष्टं मिच्छति ॥ १० ॥ ननु मां कर्तुं
 दुष्टं मनसैव सख्यं कुरुष्व । दिव्यं ददा मित्रं च दुष्टं
 मम यथा गच्छेत् ॥ ११ ॥ ॥ स कथं उवाच ॥ ॥ भवम्
 कृतं नानाकृत्स्नं महात्मा न गच्छेत् ॥ १२ ॥ ददर्श यामास
 यो र्थं यत्पुनर्मनूयमेव ॥ १३ ॥ अत्र कवकं नयनं
 मनः काकुत्स्नं ददर्श ॥ १४ ॥ अत्र कदिव्या रुचं दिव्या न

६३

का द्युतायुधं ॥ १० ॥ दिव्या मा ल्यां वने धनं दिव्यं
 धनं लं यनं । सदा यथा मयि ददं मनसैव विष्णो
 मयि ॥ ११ ॥ दिविसूर्य सहस्रस्य हं वदु गयदः
 हिता ॥ यदि रु ४ सदृशी सा स्याद्वा सस्रस्य महा
 समन ॥ १२ ॥ ननु कर्तुं जगत्कृत्स्नं प्रविह क म
 नः कथं ॥ अथ यथा ददं स गनी वया उ वसुदा
 ॥ १३ ॥ ननु ४ स विस्मया विष्ठा दृष्टं यामा धनं क

व२

यथा यद्यपि मित्रसादर्व, कृणां कृलिनहायत ४।
 ॥१४॥ अर्कनउवाय ॥॥ यद्यपि मिदर्वी सुवदह्व
 दह, सवत्तिथमहूतवि (म) वसंद्यानू। पुष्पाहमा
 र्ण कमलासनसु, नृवी ४३ सवो नूनम ४३ दिव्या
 नू ॥१५॥ अनेक वादू दनवक ननु, यद्यपि मित्राः
 सवतो इ न नूर्य ॥ नाने नमधु नयून सुवादि,
 यद्यपि मि वि (म) न वि ४३ नूर्य ॥१६॥ किनादि नन

७४

दिन च कि हीव नं जा न मि सर्वता दी फर्षतः। य
 म्म मि त्वां दु त्रि नो कं समता, दी फा नला कं शु
 निम यु म र्य ॥१७॥ त्वमक न य नम व दिग
 र्ण, त्वमस्य वि ४३ स्य यन नि धनी। त्वमयय ४:
 म ४३ न ध म्म (म) फा सुनात नत्वं, यू ३ याम का
 म ॥१८॥ अनादिमधु, नमनं न वा य, मर्न न
 वादू, न मि सूर्य ननु। यद्यपि मि त्वां दी, फर्षता

भव कुं, स्व न ऊ सा वि, न्व मिदं नृपतं ॥ १२ ॥ द्या
 वा य धि या वि द म न व हि, या कं त्व ये क न दि म ॥ १३
 सर्वा ॥ दृष्ट्वा कुतं नृय मिदं मथा गुं, ला क नृयं पुत्र
 धि तं महात्मनू ॥ २० ॥ वृमी हि त्या सून संधा विष्णु
 ति, कं चि द्दी ना ४ पुं कलया गृहीति । त्वस्मीत्यः
 कुमह वि सिद्ध संद्या ४ कुर्वति त्वां मुक्तिरि ४ य
 कला हि ४ ॥ २१ ॥ नृडा दि त्या व स वा य व सा ध्या

(३५)

वि ८५ व ५ वि नो म नृ न ८५ व ५ व्या या न्वा । न ध र्व यः
 का सून सिद्ध संद्या, वा दं न त्वां विस्मि ना ८५ व स
 र्व ॥ २२ ॥ नृयं मह रु व द्वा व कु न नृं, महा वा हा
 व द्वा वा द्वा नृया दं । व द्वा द न व द्वा दं कु क नालीः
 दृष्ट्वा ला का ४ पुत्र धि ना स्र था ही ॥ २३ ॥ नृह ४
 ली दा फ म ने क व र्ध, या फा न नं दा फ वि ५ म ल न
 गुं ॥ दृष्ट्वा हि त्वां पुत्र धि ना न ना त्मा, धृति न वि

ल

दामिनामचविष्णु॥२५॥ दंष्ट्राकनालानिवर्तमुरवा
 निदुष्टवकालानलसन्निहानि। दि० लानेका नैनः
 लं रुचमर्म युसी ददवम ऊरु निवास॥२६॥ अ
 मावला धुननायुस्य युगा ४ सर्वसह वावनि यालस
 यै ४। लीष्माडा ४ हन युगसु थां महासद्येन
 यियाध मुर्यै ४॥२७॥ वकुाहिनलनमाहम वि ०
 निदंष्ट्राकनालानिरयानकानि। क विद्विलग्ना
 २५

५५

॥२८॥ १०००
 दमनाकनयसंदृष्टं न चूडि मे दूतमथानदीना
 वहवाइवृवम ४ समुद्रं भवो हि मुरवाडुर्वनि। न
 थनवामीननलाकवाना विम निवकुा ह्यरिवि
 कलंति॥२९॥ यथायुदीयं कलनयनं गम विष्णुः
 तिनाम यस्मद्वे गम ४ नलं वेनाम य वि ० नि
 लाका सुवा यिवकुा हि समुद्रं गम ४॥३०॥ ललि
 कृष्णसमान ४ समता, ला कानुमग्रानयने।

कलहि ॥ नञाहि नायूर्यज गत्सभ गी, राससुवा गुम ॥ ४८ ॥
 तयं निविष्णु ॥ १० ॥ आरवाहि भका रुवानु गुनूथा,
 नमा मुनद ववन युसी द। विष्ठा गुमिच्छा मिह वक्तः
 माद्यं, नहि युजा नामित वयु वृत्ति ॥ ११ ॥ ॥ गीरुग
 वानुवाच ॥ ॥ कोला इमि ला क द य कृत्य वृद्धा लाः
 का मा माहर्नु मिह य वृत्त ॥ ४ ॥ अन इयि ली नरु विष्णु
 निसर्व, य इ व लिंगा ॥ ४ ॥ य ली क वृथा ॥ ४ ॥ १२ ॥ न

७८

^ह
 मा लै मलि वृय ॥ ४८ ॥ लरुह, जि लां न क नु के नाई
 स न ड ॥ मय वेत नि ह ता यू व भवे निमि रु मा लीः
 रु व स य सा चि नू ॥ १३ ॥ डा ई व री वी व ज य ड थ
 व, क र्णु न थ नान वि या थ वी नान। मया ह ताः
 ह्वं ऊ हि मा य थि ला, व थ स ऊ ना सि न ॥ ४ ॥ स य
 ली नू ॥ १४ ॥ ॥ स ऊ य ड वा च ॥ ॥ ७ न वृ ला य च न
 क ॥ व स, क ता ऊ लि व य मा न ॥ कि नो दा ॥ न म

लु लो हय उवा ह कृष्णं स्वद्वंद्वी नही न ५ यक्ष म्य
 ॥३५॥ ॥ अ कृ न उवा च ॥ ॥ लो न द्व बा के ल न व यु को
 स्या लो अ ग ल्य ह बा ल्य न व कृ न व । व द्वां सि ही नानि दि
 (५५) दु वं ति सर्व नम स्यं ति व सि द्व सं द्या ॥३६॥ कः
 स्या वृ न न न भ व न्म हा ल । ना वी य सं वृ क (५५) ३
 य्या दि क ह ॥ अ न न द व ल ज ग नि वा स ल मं क
 न स द स ह ल्य न य न ॥३७॥ लो मा दि द व ४ यू न व ४

५६

पु न्ना ५ । लु म स्य वि ल्वा स्य य न नि धन । व द्वां ३ सि वः
 द्यं व य न व ध म ल्य यी त न वि ल्वा म न न क नू य ॥३८॥
 वा य य मी ग्नि व न्द्र ह ५ क ४ यु जा य कि ल्वा य यि
 ना म ह ५ । न मा न म ह्म सु स ह म ह्म ल्वा ४ यू न
 ५ ह्म य ३ यि न मा न म ह्म ॥३९॥ न म ४ यू न क्वा द
 थ पृ लु न ह्म न मा कु न सर्व न ५ व स ह्म अ न न
 वी र्या मि त वि कृ म ह्म सर्व स मा यी वि न न

सर्व ॥ ४० ॥ सशक्तिमत्त्वाय हरं यदुक्तं हृदयं
 हृदयादवहं सशक्तिः । अज्ञानतामहिमो न मे
 दं मया युमादात्युदायनवापि ॥ ४१ ॥ यच्चाव
 हासार्थमसत्कृता इति विद्वान्नाम्यासनराजनं
 वृ ॥ ७ ॥ का इथवा यच्चाननसुमर्कं न लोका मयत्वा
 महमयुमर्थं ॥ ४२ ॥ विनासिलो कस्य च वाच
 नस्य लमस्य यूयं ष्वगु नृज्जवा यानूनलस्य

६२

भा ३ स्य ल्यधिक ४ कृता इत्या ला कतु य इय प्रुति
 न यु राव ४ ॥ ४३ ॥ तस्मात्तु हाम्यप्रुति धाय कार्यः
 प्रुतादयं त्वा महमा लमी द्यं । यिनवयूगस्य सश्व
 व सश्व ४ प्रुि य ४ प्रुियाया ह सि दवसा र्द ॥ ४४ ॥
 अदृष्ट पूर्व ह विना सि दृष्टु हयनव युयुधिर्
 मनाभा त दव भद नय दव नृय प्रुता द दव नः
 जगन्निवास ॥ ४५ ॥ किनीदिनं गदिनं वक्रहृदि
 ४ ॥ ०० मानिकमा सि गवाडु तानि कृता नियर्ष न नयो वरु नः ॥
 नमं गुह्यनीय निमानमं कि नतं जस्य विवतस्य विवतः ॥

मिच्छी मिच्छा दुक्क महं न (येव) । न मे व नू य हा न न न
 न सह सुवा हा रु व वि ष्व मू ह ॥ ४॥ ४५ ॥ ॥ श्री ह न वा
 नू वा च ॥ ॥ म या पु स न न न वा कू न द नू य य न द
 ति ति मा ल्म या ग म न । न ऊ म य वि ष्व म न न मा पु य
 म्म ल द न्म न न दू ह यूर्ध्व ॥ ४॥ ४६ ॥ न व द य ह्म य म
 न्द न न न च क्रि या हि न न यो हि नू (ये) ॥ ४७ ॥ व नू य ४
 म य्म महं नू ला क ड्ड हू ल द न्म न क नू पु वी न ॥
 ३

२ श्री ती म ना ४

॥ ४८ ॥ म न वा थ मा च वि नू रु हा वा दू ह्म नू य धा न
 मा द द्म म द । य थ न हा ४ यून ह्म न द व म नू य मि
 द पु य म्म ॥ ४९ ॥ ॥ स ऊ य उ वा च ॥ ॥ ॐ ए कू न वा ह
 द व रु (थ) ल्म ल्म क नू य द म्म या मा स रु य ४ । आ म्म
 स या मा च हा न म न नू ल्म यून ४ सी म्म व य म्म ह्म ल्म
 ॥ ५० ॥ ॥ श्रू न उ वा च ॥ ॥ दू ह्म द मा नू य नू य न व
 सी म्म ऊ ना द न ॥ ॐ दा ना म सि ह व रु ४ य कू ति

स व गा १

नमः ॥ ५१ ॥ ॥ श्रीरुग्गवान्वाच ॥ ॥ सुदृढं नमिदं
 यं दृष्टवानसि यन्मम । दवाभूयस्य नूयस्य निषे
 दनं न कर्हि हि ॥ ५२ ॥ नाहं वै देव न तयसा न दा
 भन न वञ्छया । न कुरुर्विधेः दुष्टं दृष्टवानसि
 मयि ॥ ५३ ॥ हृक्का लनन्यया न कुरु मेव
 विधेः इह न । शान्तं दुष्टं वनं न । प्रवृत्तं वयनं
 य ॥ ५४ ॥ मत्कुरु नमस्त्यजभा मरु कुरु ॥

११

गवर्जितः । निर्वैमः सर्वरूपः यः समातिपा
 द्य ॥ ५५ ॥ ॥ ॐ नमो श्रीरुग्गवान्वाच ॥ सुयनिष
 सुबुद्ध विद्यायां या नमः ॥ ५६ ॥ श्रीकुरु कुरु नमः
 वाद विष्णुयदग्नानामैकादशमध्याय
 ॥ ११ ॥ ॥ ॐ नमो वाच ॥ ॥ ॐ नमो नयुकाय रु
 क्ताह्नि ययु पाहना यवाय कनमय कुरु कुरु
 यागविहमा ॥ १२ ॥ श्रीरुग्गवान्वाच ॥ ॥ मयाव

ममनायमां निहयूका उयासना मुद्रया यनशा
 यना सुभयूक नमामना ॥ २॥ यत्न कनम निहयू
 मय कं पय्या यासने । सर्वजुगम विहयू कुरु
 मचलं कुर्वी ॥ ३॥ सन्नियगुम सवर्जसमवुद्रय ॥
 तप्रापूवनिमामव, सर्वरुतहि ननना ॥ ४॥ कुरु ॥ १२
 इधिकतनरुबा, मयका सकुचनसा । अथका
 हिगतिद्वि ॥ ४॥ दहवहि नवायन ॥ ५॥ यगुसर्वा

दिकर्मादि मयि सन्यस्यमत्यना ॥ अनन्यमेवशाः
 गन मां ध्यायेन्नुयासत ॥ ६॥ नवामह समुद्रला
 नत्यसंज्ञानसागनात् । रुयामिन विना त्याथ मया
 वजितवतसा ॥ ७॥ मया वमन आधत्यमयि वः
 द्विनिवलय । निवजिष्य सिमया व, अतपुर्द्वनसं
 लय ॥ ८॥ अथ चिहं समाधत्तुं नमो भूमा विमयिहि
 न । अस्यासया गनतना, मासि कुयु धनं कय ॥

॥२॥ अथाहं इयमसमं ॥ ५ ॥ सि मल्लमय न मा रु ॥
 मदर्थमपि कर्मादि कर्षन्ति द्विमवायुसि ॥ १० ॥
 ॥ अथेतदयमसकासि कर्तु मया गमा गित ॥ ११ ॥
 सर्वकर्मफलत्यागं ततः ॥ कर्तव्यतात्मवान् ॥ १२ ॥
 ॥ अथाहिंसा नमस्यासा इत्यानाद्या न विनिश्चयत ॥
 धनानां कर्मफलत्यागं स्यात्तु नित्यं न न ॥ १३ ॥
 ॥ अथैषा सर्वरुतानां ॥ १४ ॥ कर्तव्यता ॥ वचानि म

१३

भानि नहं कानः ॥ समदः खसुखः दुःखः ॥ १५ ॥
 दुःखः सगतीयागा यनात्मा दुर निश्चयः ॥ मयः
 चित्तमना वृद्धि आ मरुक् ॥ समप्रियः ॥ १६ ॥
 सा नो द्विजनलोका लोका नो द्विजनवयः ॥ हर्षा
 मर्षरथाद्व ॥ १७ ॥ मूर्क्यायः सवमप्रियः ॥ १८ ॥
 दृष्टानि न द्वि न ॥ १९ ॥ वनि न कां क नि ॥ २० ॥
 यनित्यागा रुक्मि मान्यः ॥ समप्रियः ॥ २१ ॥

ॐ वमिष्ठु च तथामायायमानया ॥ १८ ॥ आनायुसुख
 १९ ॥ सम १९ ॥ संगविचक्रित ॥ १९ ॥ ॥ तुल्य निदाम
 निमोनां संगुक्षायनकनचिन् । अति कनहि नः
 मतिरुक्तिमान्मयिथानन ॥ १९ ॥ यातु धम्मः नमि
 दीयत्थकं यय्यासत् । ॥ १९ ॥ धनामत्यनमा रुका
 सुतावमयिया ॥ १९ ॥ ॥ ॐ निग्राहगवकीनाहयनि
 वसुवक्रविद्यायां याग ॥ १९ ॥ ॐ ग्राहकान् न संवादरुकि

१५

या ॥ १९ ॥ नाम द ॥ १९ ॥ ॥ ॐ ॥ १९ ॥ ॥
 ॥ अर्कनठवाच ॥ ॥ युक्तमिष्टुयवैव ॥ १९ ॥ ॥
 ॥ १९ ॥ वच । ॥ नदु दिनुमिचामि ॥ १९ ॥ ॥
 व ॥ १९ ॥ ॥ ग्रीहगवानुवाच ॥ ॥ ॐ दं ननीन कोनय
 केतुमित्यहि धायत । ॥ नद्या वलि ॥ १९ ॥ ॥
 ॥ ॐ ॥ नितदिद ॥ १९ ॥ ॥ वायिमां विदि ॥ १९ ॥ ॥
 केतुषु रानन ॥ १९ ॥ ॥ ॐ ॥ १९ ॥ ॥

[illegible]

धृति ४॥ ७॥ न ह्येकं गुं समाप्तं न सविकारमूदाहृतं ॥
॥ १॥ अमानित्वमदहिले मदि साक्षात्तिना किं
वै। आयायो यासनं (मे वं ह्ये यमास वि लि गुः
रु ४॥ ८॥ ॐ त्रि या (थ वृथे ना ह्ये मन ह्ये का न म व रं
। ऊ न म ह्ये ऊ ना या धि द् ४ स्व दा वा नू द र्ग न ॥ १॥
अ न कि न न हि र्ध न ४ यू न दा न गृ हा दि षू। नि र्ध
स म वि रु ल मि षू नि षू य य हि षू ॥ १॥ म यि र

यं ज्ञानगम्यं, हृदि सर्वस्य विष्ठितं ॥ १८ ॥ न गच्छेत्तु न
 धाम्ना न, यं यथा कं समासत ॥ मरु कं न विदुः यः
 मरु वाया ययद्य न ॥ १९ ॥ युक्तं नि यून वं चैव, विदुः
 नादी कुरावयि। विकारं च गुह्यं चैव, विदुः युक्तं
 निरुहयान् ॥ २० ॥ कार्यकान्तं कल्लं, हं नु ४ युक्तं
 निरुहयान्। यून व ४ सुखद ४ खाना, हा कल्लं हं नु न
 यान् ॥ २१ ॥ यून व ४ युक्तं निरुहयान्, हं नु कल्लं निजा

१६
 ११

गुह्यं न ॥ कार्यकान्तं गुह्यं चैव, सदस्यानि क
 ल्लं ॥ २२ ॥ ठयड कानुमना च, हं नु भो कामहं
 यन ४ यनमात्मनि वा, युक्तं, दहं सि यून वः
 ४ यन ४ २३ ॥ यज वं वं हि, यून वं, युक्तं नि व गु
 ह्यं ४ सह। सर्वथा वल्लं माना चि न सरु या रिजा य
 न ॥ २४ ॥ ध्याननात्मनियं यं नि कचिदात्मानमा
 लना। अथ साश्वा नथा न न कर्मथा न न चाय

न ॥ २५ ॥ अथ त्वं नमज्जानक ४ पुत्रा अथ उपास
 न ॥ २६ ॥ पिता नित्यं व मृत्पुत्रि यथाय ४
 ४ ॥ २७ ॥ यावत्सं जायते किंचि सत्त्वं स्रवणं
 नमः ॥ २८ ॥ पुत्रं पुत्रं पुत्रं पुत्रं पुत्रं पुत्रं पुत्रं
 ४ ॥ २९ ॥ समस्तं सर्वं वृत्तं नृत्तिं वृत्तं यत्र म
 नः ॥ ३० ॥ विनश्यत् विनश्यत् नृत्तिं यत्र म
 नः ॥ ३१ ॥ समस्तं सर्वं नृत्तिं सर्वं समस्तं
 नमः ॥ ३२ ॥ नहि नृत्तिं नमः नमः नमः नमः

१८

नमः ॥ ३३ ॥ पुत्रं वृत्तं वृत्तं वृत्तं वृत्तं वृत्तं वृत्तं
 नमः ॥ ३४ ॥ यत्र म नमः यत्र म नमः यत्र म नमः
 कुरु नमः ॥ ३५ ॥ यदा वृत्तं यत्र म नमः यत्र म नमः
 कुरु नमः ॥ ३६ ॥ तत्र नमः वृत्तं वृत्तं वृत्तं वृत्तं
 यत्र म नमः ॥ ३७ ॥ अनादि त्वं नमः वृत्तं वृत्तं वृत्तं
 नमः ॥ ३८ ॥ यत्र म नमः यत्र म नमः यत्र म नमः
 नमः ॥ ३९ ॥ यत्र म नमः यत्र म नमः यत्र म नमः
 नमः ॥ ४० ॥ यत्र म नमः यत्र म नमः यत्र म नमः

भायलि व्यने ॥ ३३ ॥ यथा युका जयत्येक ४ कर्त्तुं
 ला क मिमं व वि ४ ॥ कुरु कुरु न तथा कर्त्तुं युका
 जयति ह नत ॥ ३४ ॥ कुरु कुरु युयाव न व मनत्र
 स्तानवदु या ॥ रुतयु क कि मा दै च य विदे यी
 नित यव ॥ ३५ ॥ ॥ ॐ ति णा रु ग व द्वा ना सू य नि
 व स्रु व द्वा वि द्या र्था या ग म म् ॐ णा कृ ष्ण कृ न ह
 वा द कुरु कुरु नि दे ८ ॥ नाम तु या द ८ ॥ ध्वा
 य ४ ॥ १३ ॥ ॥

१२

॥ णा रु ग वा नू वा च ॥ ॥ यव रू य ४ यु व क्का मि द्वा
 ना नां स्तान मरु म् ॥ य द्वा ला म न य ४ सर्व यव
 सि दि मि ना ग ता ४ ॥ १ ॥ ॐ दं स्तान मू या नि त्र य म
 म सा ध म्मा मा ग ता ४ ॥ स र्ग वि ना य द्वा र्थ नं यु ल य
 न य थं नि व ॥ २ ॥ म म या नि म द्वा क न मि न ग र्ह
 द ध म्म र्ह ॥ स रू व ४ सर्व रू ग ना नां ग ता रु व मि रा
 व ता ॥ ३ ॥ सर्व या नि षु को न य मू रू य ४ स रू

वक्ति या ४। नासां बुद्धमह द्या नि नई वा ऊ पुद ४
 पिता ॥ ४ ॥ स खै न ऊ सु म ठुं ति पु ४ ॥ ४ ॥ पु कृ ति
 सै रु वा ४। नि व धृ ति म हा वा हा द ह द हि न म
 वृ य ॥ ५ ॥ ग गु स ख नि म्म ल त्वा लु का म क म ना
 म य ॥ स र व सै (ग न व धृ ति) स्ना न सै (ग न व न द्य
 ॥ ६ ॥ न ऊ ना ग म ल क वि दि, ह वृ सै ग स मू ह
 व ॥ न नि व धृ ति को न य, क म्म सै (ग न व द हि

६०

नी ॥ १ ॥ ग म ल स्ना न ऊ वि दि भा ह नी स र्व द हि
 नी ॥ पु मा द ल ह नि डा हि, सु नि व धृ ति रा न न
 ॥ ८ ॥ सै ल्य स र व सै ऊ य ति, न ऊ ४ क म्म हि रा न न
 ॥ स्ना न मा वृ ल्य गु न म ४, पु मा द सै ऊ य लू न ॥ ९ ॥
 न ऊ सु म धृ ति ह रू य, स खै रु व ति रा न न ॥ न ऊ ४
 ४ स खै न म (वे व, न म ४ स खै न ऊ सु थ ॥ १० ॥ स
 व द न व द ह सि, पु का म उ य ऊ य न ॥ स्ना न

यदागदाविद्या, विवृद्धं सत्त्वं मिल्यते ॥११॥ लोहयु
 वृत्तिना नैव ४ कर्म ६॥ मसमस्य हा। नऊ स्थिता
 निजा यं न, विवृद्धं न न वरु ॥१२॥ अयुकाः
 (४॥३॥ पुवृत्ति ४४, युमादाभाह ५ वच। नमः
 स्थितानि जायं न, विवृद्धं कृत् न नन्दन ॥१३॥ यदा
 सत्ययुवृद्धं पु, पुल्यं याति दह हत। नदा
 रु म विदी ला का, नमाला न्युति यद्यति ॥१४॥

८९

नऊ सियुलयं गत्वा, कर्मसंगियुजायतं। नथ ॥ पु
 ली नरु मसि, मूरया निषुजायतं ॥१५॥ कर्म ६
 ४ सुकगस्याद् ४ सा हिं कं निम्मलं रुलं। नऊ स
 म् रुलं द ४ स्व, मझानं नमस ४ रुलं ॥१६॥ सखा
 स जायतं झानं, नऊ सा लाह ५ वच। युमादभाहीः
 नमसा रुवता इझा नभवच ॥१७॥ उर्द्धं गच्छु कि स
 खात्तु, मध्यानिष्ठु कि नाऊसा ४। ऊद्यन्य गुहा वृत्ति

ल्हा अ (ध) ग च नि ग म स ॥ १८ ॥ नान्य गु (ह) ह्य ४
 क ल नि य दा दु ल नू य स्थ ति । गु (ह) ह्य स्थ य न
 वि हि म डा वी सा २ धि ग च नि ॥ १९ ॥ गु ध म न ना न
 ना ह्य गु न दे ही य ह स म ह वा न् । ऊ न म म ल्य ऊ ना द
 ४ र्वे वि मू क्ता २ म न म म न्ते ॥ २० ॥ ॥ अ कू न उ
 वा च ॥ की र्ति (ग) म्नी न गु ध म न ना न ना ना रु व नि यु
 हा कि म । वा न ४ क र्थ र्थ ना म्नी न गु ध म न नि व रु ना

८२

॥ २१ ॥ गृ ह ग वा न् वा च ॥ ॥ यु का र्ण व पु वृ हि च भा ह
 भ व च या धु व । न द्द वि स य कू रु नि न नि वृ रु नि
 का क ति ॥ २२ ॥ उ दा सी न व दा सी ना गु (ह) र्थ ना न
 वि चा ल्य न । गु ध म य रु न्ते र्थ र्थ ना व नि रु ति न
 न्ते ॥ २३ ॥ स म द् ४ र व स र व ल्हा ४ स म ल्हा र्थ ना न
 व न ४ गु ल्य यि या पि या धा न । गु ल्य नि द्या ल्म स म्पु ति
 ४ २४ ॥ मा ना य मा न या गु ल्य गु ल्या मि ता नि य द्

या ४। सर्वान् रुयविल्यागा, गुह्यमात ४ सुउद्युत ॥ २५ ॥
 मां च या इव हि वा न हारु कि या गन स व न + स गुह्य
 नम मनी एते ना नुष्क रुया य क ल्य न ॥ २६ ॥ वृक्ष
 (हम हि पु नि छा ह म म न त्या वा य स्य च + म म न त्या
 च धर्मस्य सुखस्यै कान्त कस्य च ॥ २७ ॥ तुं ति श्री
 हाग वङ्गी नासूय नि व सुवक्ष्म द्या र्या या ग म म कृ श्री
 कृष्णानि सैवा द गुह्य ग्रय वि हा (म ना म च तु र्द (म

२३

इक्ष्वायु ४ ॥ १४ ॥ ॥ श्री रुग वानु वाच ॥ ॥ उद्ध मूल मध ४
 म म रव म म व लुं या द न वा र्यं । कृं दी रिया स्य य ध्म
 नि, य लुं व द स व द वि न् ॥ १ ॥ अ ध (म म र्द पु र्द ना क
 स्य म रवा, गुह्य पु र्द द्या वि षय पु वा ला ४ । अ ध म म ल
 न्य न र्द न ता नि, क म्मा न र्द धा नि म नू य ला क ॥ २ ॥
 न नू य म म र्द ह न (थ य ल ह न, ना ना न वा दि न
 व र्द पु नि छा । अ म व लु म न र्द वि नू र मूल म र्द ग म म
 हा द र न चि ता ॥ ३ ॥ त न ४ य र्द न र्द न ल्य वि मा ग्नि न
 न

यस्मिन् गताननिवर्त्तु निरुय ११ मयवा इयं पुनः
 वं पुपद्यं यत ४ युवृ ॥ ६ ॥ ४ युवृ गायनाधी ॥ ७ ॥ नि
 म्मा विभा हाति नर्स गथा या अक्षत्म नित्या विनिवृत्त
 कामा ११ द्वे द्वे विमूका सुखद ४ खर्ष ८ मे ग्न वृ न्यमू
 दा ४ यदमव्ययं ननु ॥ ५ ॥ न गदा सयनं सुयानि ११
 ११ का नयावक ४ ॥ येन त्या ननिवर्त्तु न नदा मयन
 ममम ॥ ६ ॥ ममेवा ८ ११ जी वला के जी वरुत ४ सना

६४

गन ११ मन ४ यष्टानाद्वि यादि युवृ नित्य निकर्षति ॥
 ॥ ७ ॥ ११ नी नयदवायाति यत्रा युत्कामती श्वन ४ गृही
 लेता निर्स याति वायू र्म क्ष निवासु यन् ॥ ८ ॥ ८ ११ वृ वृ
 ४ स्य र्म नव नसर्दी द्या ११ मवच ॥ अ धि वृ यमन र्म यः
 विषया नृप सवत ॥ ९ ॥ ९ ११ उत्कामती लि र्म वायि र्म जान
 यां गु क्ष निर्वी ॥ वि मृदा नानृप र्म ति य र्म नि र्म नवः
 कृष ४ ॥ १० ॥ यती नाया निन ८ ११ र्म य र्म त्या ल्म न्यवलि

गी॥ यगीशा ३ प्राकृतात्मानो नैर्वयमर्थं ह्यवतंस ॥ ११ ॥
यदादिद्यु नर्तनं कृत्वा जगद्भासयन् ॥ १२ ॥ इत्यनुमः
सि यद्वा ८०० गुरुका विद्विमासकं ॥ १३ ॥ गमाविश्वव
रुतानि धनयाम्यहमाकसा यस्मात्सिचोषधी ४ सर्वा
४ सामाहृत्वा न गमत्सक ४ ॥ १४ ॥ अहं वै श्व नया ह
त्वा प्रादिनीदहमाग्निता ४ प्राध्यायानसमायुः
क ४ यवा म्यनै वतु विधि ॥ १५ ॥ सर्वस्य वाहं ह

दि सन्निविष्टा महः ४ स्म तिह्नि नमथाह नैवायदे श्वस
वै नहभवयद्या वदानककुहदविदववाह ॥ १६ ॥ द्रवि
मो पुन्रखी लाक क न श्व क न वच ४ सर्व द्वि
रुतानि कूटस्म ३ क न उवा ॥ १७ ॥ उहम ४ पुन्रष
ह्यन्य ४ पनमा ह्य दहत् ४ या ला क गुयमा विश्व
विरुह्य व्यय ००० श्वन ४ ॥ १८ ॥ यस्माह नम माता ३ ह
म क नादयि वा रु म ४ अ मा ॥ १९ ॥ लि ला क व द व

प्रह्नि न ४ पूरुषा रु स ४ ॥ १२ ॥ यो मा म व स र्म मूटा,
 ज्ञाना नि पूरुषा रु स ४ ॥ सर्व स वि ह क नि मा, स
 व रु ध न हा व न ॥ १५ ॥ ठु नि गु द्म ग म म म रु नि
 द मू र्क म या न द्या ५ ग दू धा वू द्वि मा ल्या, कु नः ५७
 कृ ल्य ४ हा व न ॥ २० ॥ ॥ ठु नि गु रू ग व द्म ता स
 य नि व लु व द्म वि द्या यी या ग म म रु, गु कृ ल्य र्कः
 न र्म वा द, पूरुषा रु स ४ या म नाम, यं य द (म २५)

य ४ ॥ १५ ॥ ॥ गु रू ग वान्वा व ॥ ॥ अरु र्थ स ल्य र्म
 गु द्वि, र्म न या ग व व ल्कि नि ४। दानं द म ४ य द्म
 ४, ला ध्म य लु प य र्क र्क ॥ १॥ अरु र्म स ल्य म ४
 ध ल्या ग ४ म नि व ये गु नं। द या रू ग व लाल ल्म,
 मा द व र्म द्म व या व लं ॥ २॥ ग ४ कृ मा ५ नि ४ (म
 व म द्म हा ना रि मा नि ४। रु व नि र्म य दं ये वा, म रि
 ज्ञान स्य वा गु व ॥ ३॥ द हं द थो र्म रि मा न य ४

४४ या नृप्यमवच। भूला न का हि जातस्य यार्थसं
 यदमासुनी ॥ ४॥ देवी संयदि भाक्षय निर्वंध
 या सुनीमता। मासुच ४ सं यददेवी, महि जातसया
 छुव ॥ ५॥ दोरुतस (जो) लोक ३ सिंदेव आसुन ६७
 नवच देवा वि सुन ४ था क आसुन यार्थमन
 ६॥ ७॥ पुवृहि च नि ६ वृहि व क नान विदनास

ना ४॥ न (जो) चीचायि नावाया, नसत्यं न वृ वि द्यत ॥
 ॥ ८॥ असत्यमयुति ४ न, क ग दा दूननी ४ वनी। न
 यनस्य न सीरुनी, किमन्यत्कामहे तुर्क ॥ ९॥ ७ नादि
 छि मव सुत्य, नक्षात्माना ३ ल्य वृद्धय ४। पुरुर्वत्यः
 न कर्मा ४ ४ कयाय क ग ना हि ना ४॥ १०॥ काममात्रि
 ल्य ४ ४ पूनं देरुमानमयानिना ४। भा हा कृ हीत्या
 सहा हा, न्य वरु न ३ ४ पु वि पु ना ४॥ १०॥ चिनामः

यविमयां च, पुलयां तामूया भिता ४॥ कामायका
 गयनमा, ७ तावदिति निश्चिता ४॥ ११॥ आभायाभ
 मनेष्टि ४, कामकाधयनाय ४॥ १२॥ हुं हन कामः
 हाभर्थ, मन्त्रयनाथ संवयान ॥ १२॥ हुं दमयम
 यालव, मिर्मयायुं ममानर्थ, हुं दमस्ती दमयिम, ६२
 रविष्यति यून दुर्न ॥ १३॥ अहो मया हन ४॥ हुं
 हनिष्यवायनानयि, हुं न्वथा ६ हन हन गतिः

ओ ६ हं वल वा न्मुखी ॥ १४॥ आ ५ ६ हि जनवानस्मि,
 काम्या ६ हिसदृ ६॥ मया। य ५ ६ दाया मिमादिष्य,
 हुं लयज्ञानविभाहिना ४॥ १५॥ अनेकचिरुविज्जि
 ना, माहुकालसमावृता ४॥ युस, ६ कामरु ६॥
 षु, यनकिन नक लु ५ ॥ १६॥ आस हं राविना ४
 लु ५, धनमानमदाचिना ४॥ यज्ज न नामय ६ ६
 देहना विधिपूर्वक ॥ १७॥ अहं कार्य वल दय

कामक्रा धं वही प्रिना ४ मामात्मपनदहृषु पुद्विष
 का इत्यस्यका ४॥ १६॥ तानहं द्विषण ४ कृनामी
 सा न वृ नना धमान्। दि वा मयकमुमगु हा नाह
 ना धं वया निव ॥ १७॥ आसुनाया निमा यनाम
 राक नमिह नमि। मामया यी यकी नय न ना यं
 स धमी गति ॥ २०॥ नि वि धं ननक स्य द्द्वानः
 ना न नमात्मन ४ काम ४ का धसु थ लोह सुला

६७

दन कुर्येयक ॥ २१॥ ७ ते विमूक ४ को नय न
 भा दाने मि हि ने न ४ आवन लात्मन ४ (७) य सु
 ना या नि यना गति ॥ २२॥ य ४ ना मु
 विधि म सु अ बरु न काम क न न ४ न स हि दि म
 वा या ति न सु र्व न यना गति ॥ २३॥ गत्मा मु सु
 प्र मा ही न का म्या का र्थ य व हि नो। ह्वा ला ना मु
 वि ध ना की कर्म क नु मि हा ह हि ॥ २४॥ ॥

१७१ रुग्णवानुवाच ॥ त्रिविधं कुरुते बुद्धिः दहिनी सा ह्यहावका । सा हि
 को नाजसृष्टे व. नामसावति नो ॥ १२ ॥
 ७ ॥ ॥ बुद्धिनिष्ठा रुग्णवद्वा ना ह्ययनिबलं बुद्धि विद्या
 यां या नान्मकुं श्री कृष्ण कूर्च न संवाद देवास्तनयक
 निविहा ८०० नामसावत ८०० धूम य ८॥ १७ ॥ ॥
 ॥ ॥ अर्क नडवाच ॥ ॥ यमकुविधिमस्तु अयं
 जं न भुङ्गया निना ८॥ तेषां निष्ठा नुका कृष्ण २२
 सत्वमहा नजस्तु म ८॥ १॥ सत्वा नर यासवस्य
 भुङ्गा रुवनि रुवत । भुङ्गा मया इयं यवृष ८थाय
 कृ ८ ८ ८ वस ८॥ यजं न सात्विका देवान्यद
 ॥ १३ ॥

नदी सिनाऊ स ८॥ युता कुरुत नान्मकुं यजं नः
 नामसाऊना ८॥ ४ ॥ अमकु विहि नयार्च नयार्च
 यतयाऊना ८॥ दीहा हं कावर्षयूका ८ कामनाः
 गवला निना ८॥ ५ ॥ कर्षय न ८ गनी न हं रुग्ण
 ममच न स ८॥ मावेवान ८ गनी न हं गानिद्यास्तन
 निष्ठा यान् ॥ ६ ॥ आह न ह्यपि सर्वस्य त्रिविधं रुव
 ति प्रिय ८॥ यजं ह्ययस्तु य दानं नयार्च द मिमं ८
 ८ ॥ ७ ॥ आयु ८ सत्यवला ना ग्यस्तु रव्यातिविद्य

^{जम्}
 ना॥ नह्या॥ लि॥ लि॥ लि॥ नाह्या॥ श्रुता॥ साहिकवि
 या॥ ८॥ कद्वल्लवदमल्लव॥ गी॥ रुद्रविदाहिन॥
 श्रुता॥ ना॥ कसस्य॥ ८॥ ८॥ ८॥ कामययुदा॥ ८॥
 यतया॥ म॥ ग॥ न॥ स॥ यु॥ गि॥ य॥ वि॥ त॥ व॥ य॥ ॥ उ॥ वि॥ सु॥ म॥
 वि॥ वा॥ म॥ ध॥ ॥ हा॥ ऊ॥ नी॥ गा॥ म॥ स॥ पि॥ र्य॥ ॥ १०॥ अ॥ रु॥ ला॥ का॥ दि॥
 हि॥ र्य॥ ला॥ वि॥ वि॥ दृ॥ ला॥ य॥ पु॥ ॥ न॥ ॥ य॥ रु॥ वा॥ म॥ व॥ ति॥ म॥ न॥
 स॥ मा॥ ध॥ य॥ स॥ सा॥ लि॥ क॥ ॥ ११॥ अ॥ हि॥ स॥ ध॥ य॥ रु॥ रु॥ ल॥ द॥

१००

रा॥ ध॥ मि॥ वि॥ वि॥ व॥ य॥ ॥ १०॥ अ॥ रु॥ ला॥ का॥ दि॥
 ना॥ ऊ॥ स॥ ॥ ११॥ वि॥ वि॥ दृ॥ ला॥ न॥ स॥ मा॥ ॥ का॥ ॥ न॥ म॥ गु॥ दृ॥ न॥ म॥
 द॥ दि॥ ध॥ ॥ १२॥ अ॥ रु॥ ला॥ का॥ दि॥
 ॥ १३॥ अ॥ रु॥ ला॥ का॥ दि॥
 अ॥ रु॥ ला॥ का॥ दि॥
 अ॥ रु॥ ला॥ का॥ दि॥
 अ॥ रु॥ ला॥ का॥ दि॥
 अ॥ रु॥ ला॥ का॥ दि॥

द० सोम्यर्त्त मोनमा लविनि गुह ४। लावर्त्त गुहः
 विहग, रुथामान समुच्चय ॥ १७ ॥ शुद्धया यय
 नया तर्क, नयस्तु विविधं नये ४। अदुला कांकि
 हिर्गुर्त्त ४। सलिकं यवि वक्तु ॥ १८ ॥ सलिकानमा
 नयुक्तार्थ, तथा दीह नये वयम्। क्रियते तदिहः
 शुर्क, नाऊर्त्त वलमं धुवम् ॥ १९ ॥ मूरुगुहं ४।
 लनाय, ली ७। य क्रियते तय ४। यवस्या ल्हायना

१०१

र्थ वा गलाम समुदाहर्त्त ॥ १९ ॥ दागव्यमिति यः
 दानं दीयते नूयका नि ८६। द ८७। कालं वयागु
 व नदानं सलिकं स्मर्त्त ॥ २० ॥ यत्तु यत्तु यकाना
 र्थ, रुलमुदि न्धवा पुन ४। दीयते वय विविधं न
 डाऊ समुदाहर्त्त ॥ २१ ॥ अदग कालयदानं मयाः
 पुण्य दीयते। असत्तु तमं यज्ञार्त्त, गलाम समुः
 दाहर्त्त ॥ २२ ॥ तुं तत्तु दिनि निर्द ८७। वक्तु हाकि

विध ४ स्मृ ४। ब्राह्म धर्म नव दान्य, यद्वा ४ विधि
 ना ४ यन्त्रा ॥ २१ ॥ गत्मा दानि एदा दान्य, यद्वा दानन
 य ४ क्रिया ४। प्रवर्त न विध ना का ४, सन न वृद्ध
 वादि ना ॥ २४ ॥ नदि ए न रि स धाय, रु ल यद्वा न
 य ४ क्रिया ४। दान क्रिया ४ विविध ४ क्रिय न मा
 द्वा क ॥ दि रि ४ ॥ २५ ॥ सद्वा व सा धू र धव स दि
 र्ध न ल्य यू र्ध न । यु र्ध न कर्म दि न धा सद्वा

१०२

४ पार्थ यू र्ध न ॥ २६ ॥ यद्वा न य सि दान न व वि ति
 ४ सदि ति वा च न । कर्म व व न द र्ध र्थ सदि र्ध व य
 यू र्ध न ॥ २७ ॥ न्नु यद्वा दान न द र्ध न य ल्प र्ध क
 न व य न् । न्नु सदि ल्प र्ध न पार्थ न व न ल्प र्ध न
 ह ॥ २८ ॥ ॥ न्नु ति या र्ध न व द्वा ना स्य निष ल्प
 न्नु वि द्या र्थ या न न्नु न्नु न्नु न्नु न्नु न्नु न्नु न्नु न्नु
 वि ध न्नु वि ध ना ना न्नु न्नु न्नु न्नु न्नु न्नु न्नु न्नु

॥१०॥ ॥ न्यास एव गविहा ॥ गनं, सर्व गाना धर्मे
 ग्रही। स एव मन्त्राद ॥ गवाह, यत्र मा धर्मे विनिर्भुय
 ॥१॥ अर्क न उवाच ॥ स न्यास एव नि ॥ ॥ ॥
 ॥ स न्यास एव मन्त्राद ॥ गवाह, न तु मिच्छा मिद दिनु। स्याः
 गवाह वदन् वीक म, यथ कृनि निरुदन ॥१॥
 ॥ एतद् गवाह वचं ॥ काम्या नां कर्म धर्म न्यास
 स न्यास कर्तव्य विद ॥ सर्व कर्म ह ल एव गी, प्राद
 त्या ग विव द्द ह ॥ २ ॥ एव ई दा य व दि त्य के,

१०३

कर्म प्रादुर्भूत विद ॥ यद् दान तय ॥ कर्म न
 एव कृमि नि या य न ॥ ३ ॥ नि वृ यं ॥ ४ ॥ भ त न
 त्या ॥ ग रु न त स रु म ॥ त्या ॥ ग हि य वृ य वा यु ति वि
 ध ॥ स एव की र्ति त ॥ ४ ॥ ॥ यद् दान तय ॥ कर्म न
 एव ई का य भ व त न ॥ यद् दान तय ॥ एव व, पा व
 ना नि स ना वि धर्म ॥ ५ ॥ ॥ ता न्य वि रु क मा धि स
 र्ग एव कृ रू त्या नि व ॥ कर्तव्या ना नि भ या र्थ नि

विमं मनसूकर्म ॥७॥ नियतस्य तु स न्यास ४ कर्म
(धमनाय यद्युतं । भाहाहस्य यवित्याग कामस
४ यविका हि नि ४॥ १॥ ॥ २४४ स्वमित्यवयवकर्मका
यकुं मरुयाह्य ऊतू । सकृत्वा नाऊतू ह्या गने
वत्याग रुलं लरुतू ॥ ६॥ कार्यमित्यवयवकर्म १०५
नियतं क्रियते इकुं न । संगं सक्ता रुलं चैवः
सत्याग ४ सावि कामन ४॥ २॥ नद्वय कललं

कर्म कुललं नानूष कुतू । त्यागा सत्वसमावि
ष्टा मधवीचि नृसंगय ४॥ १०॥ नहिदह रुता म
कृत् एकुं कर्माधम (म वन ४ । यकु कर्म रुल त्यागा
सत्यागा एरि धीयन ॥ ११॥ अनिरु मिष्टं च निवि
धं कर्म ४४ रुलं । रुव ए त्यागि नां पुत्य ननु स न्या
सिनां क्वचित् ॥ १२॥ यं चै ता नि महावाहा का नधम
निनिवाधमे । सीरवा रुता न कथा कानि सिद्धय सर्व

कर्मसंगः॥१३॥ अविद्या न तथ कर्मा, कन ही वयु थमि
 धी। विविध संयथ कृष्टा देव धे वा गु र्य रम ॥१४॥
 म नी न वा द्यु ना रि यत्कर्म या न ह न न न ॥ न्या यी
 वा वि य ना र्ता वा, य र्थे न त स्य ह न व ॥१५॥ त नै व स
 नि क र्त्तु न, मा ल्मान क व लं गु य ॥ य स्य स्य कृ त व
 धि त्वा, न स्य स्य ति दु र्म ति ॥१६॥ य स्य ना हं कृ ता
 रु धी, वृ द्धि र्था स्य न लि यु तं। ह त्वा वि स रं मा नू ला

१०५

का न्न ह कि न नि व धु तं ॥१७॥ ह्य न ह्य र्य य त्रि ह्य नाः
 ति वि धा कर्म वा द ना। क न ही कर्म क र्त्तु ति, ति वि ध
 ४ क र्म स र्ग ह ॥१८॥ ह्य न क र्म व क र्त्तु च, ति र्थे व
 गु ष्ठा रु द न ॥ या च्य नं गु ष्ठा र्थे र्वा न, य थ व वृ धू ता न्य
 पि ॥१९॥ स र्व रू त वृ थ नै क, रा व स य य मी द नं। अ वि
 रु क्ति वि रु क्ति, न ह्य न वि दि सा ति की ॥२०॥ य थ कृ
 न गु य ह्य न, ना ना रा वा न्य थ मि धा न् ॥ व हि स र्व व

रुमषु, गङ्गानविदिनाऊसं ॥२१॥ यत्तु कुल्लवदं कः
 सि काथं सकुमहेतु कं। अतत्ताथ वदल्यं व, गलाम
 समुदाहृतं ॥२२॥ नियतीसं गवहिग, मनागद्वयन ४
 कृती। अरुलयु स्युनाकर्म यरु सा लिकमच्यु नं ॥
 ॥२३॥ यत्तु कामस्युनाकर्म, साहं कावहावायून ४। कि
 यतवदुलायासं, नडाऊसमुदाहृतं ॥२४॥ अन्वर्थ
 दयंहि सा, मन यद्वैवयी नृषं, भाहादा नह्यनकर्म

१०६

गलामसमुदाहृतं ॥२५॥ मूकासं ८०५ नहं वादी, धु
 ल्साहसमन्ति ४ सि द्युसिद्धा निर्विको न ४, क
 लीसाविकउच्यु नं ॥२६॥ रागाकर्मरुल
 योयु, ल्वाहि सासका ३५ वि ॥ दुष ८०५ का
 न्वित ४ कर्त्ता नाऊस ४ यविकी लित ४ ॥२७॥ अय
 क ४ पाकन ४ कृव ४ नने कु निर्कालस ४। विषादीदा
 र्चसुगी व, कर्त्ता नामस उच्यु नं ॥२८॥ वृद्धरुदीध

न लब्धे वं गुहा न लिखि वि धं ॥ १८ ॥ या चामा नम ॥ १९ ॥
 हा यथ कुं न धनं कय ॥ २० ॥ युवु लिं व निवु लिं व
 का यार् का यार् रुया रुय । वं धं भा दं वया व लि वृदि
 ४ सायार्थ सा लि की ॥ २० ॥ यया धर्म म धर्म श्रु का
 यार् का यार् म व व । अय थ व लु काना नि वृदि १००
 सायार्थ ना क सी ॥ २१ ॥ अ धर्म धर्म मि ति या
 म न्य न न म सा रु ना । सु धा थ नि य ना ती र्थ वृदि ४
 सायार्थ नाम सी ॥ २२ ॥ धृ त्या यया ध न य न मन

४ या ८ हा नि य कि या ४ था ८ ना य हि वा नि ध्मा धृ नि
 ४ सायार्थ सा लि की ॥ २३ ॥ यया गु का म धर्मा धर्मा धृ
 त्या ध न य न १ कुं नि । यु र्त्त ८ न रु ला कां की धृ नि
 ४ सायार्थ ना क सी ॥ २४ ॥ यया लु र्त्त रु यं ८ म की वि
 बा द म द भ व वा न वि मू र्त्त नि दू र्त्त धा धृ नि ४ साया
 र्थ नाम सी ॥ २५ ॥ सु र्त्त लि दा ना ति वि धं ८ ध भ रु
 व न व र्त्त । अ त्या सा उ म न य तु ८ ४ र्त्त न व नि ग रु
 ति ॥ २६ ॥ य रु द ८ वि व मि व य नि ध्मा म १ म नी य

मी। गल्लुखं लालि कं था कू, मा लस वृद्धि पुसाद ऊं ॥११॥
 विषयं लि यसं या गम, धरु द (ग) १ नु भा यनं। यनि
 मभ विषमि व, गल्लुखं वा ऊं स स्म नं ॥१२॥ यद (ग)
 वानुर्व (ध) व, सुखं भा हन मा लन ॥ निद्रा लस्य पु
 मादा लं, गल्लुखं मस मू दा हनं ॥१३॥ नन द लि युधि
 व्याया दि वि द व पू या पुन ॥ सखं पु क ति के मू कं
 यद रि ॥ ल्या ति रि नु (हो) ॥ ४० ॥ वृ क्त ॥ क ति य

१०२

विभं, लू डा हं व यन न य। क म्मा दि यु वि रु क्ता नि
 लहा व पु रु वे नु (हो) ॥ ४१ ॥ ग मा द म ल य ४ (मे वी का
 मि ना ऊं व म व च। ज्ञान विज्ञा न मा लि कं, वृ क्त क म्मः
 लहा व ऊं ॥ ४२ ॥ (मे र्थ) न ऊं धु मि दौ र्थ, य द्वाः
 य य ला यनं। दान मी श्व न रा व र्थ, का गु क म्म ल
 हा व ऊं ॥ ४३ ॥ कृ वि (ग) न द वा हि अं वे र्थ क म्म
 लहा व ऊं। य नि वा र्था ल र्क क म्म, नू द ल्या वि लहा

यज्ज ॥ ४४ ॥ स्वस्वकर्म ह्यहि नग ४ सीसिद्धि लरुग
 नन ४। स्वकर्म निनत ४ सिद्धि यथ विद निगवुः
 ह ॥ ४५ ॥ यन ४ युवृहि रूगानां यन सर्व निद
 तनी ॥ स्वकर्म ह्यनमस्य शु सिद्धि विन्द निमानव
 ४ ॥ ४६ ॥ ८७ या न्व धर्मा विगु ४ यन धर्म स्वन्
 षि गान् । सुहा वनि यन कर्म कर्बनाया नि कि
 लि र्ब ॥ ४७ ॥ सह ऊ कर्म को कय सदा वम वि

१०२

न लयऊत । सर्वा रूहादि धाय ह धूमना निवि
 वा वृत्त ४ ॥ ४८ ॥ शुभ क वृद्धि ४ सर्वत्र जिगाः
 ला विगत स्य ह ४ नै कर्म सिद्धि यन मर्हिः
 न्यासना विगवृत्ति ॥ ४९ ॥ सिद्धि युका यथ व
 द्म त थं या नि नि वा धमासमा सने व को कः
 य निष्ठा ज्ञानस्य वा यना ४ ॥ ५० ॥ वृद्धा विगु
 दया युक्ता ध्याता न नियमव । न द्वा दानि

वयात्मा का नागद्वयो वृद्धस्य च ॥ ५१ ॥ विविक्ता
 सुवील द्यामी यनवा का येमानस ॥ ५२ ॥ ध्यानया
 नयनानिर्लभं येनाई समुपागिन ॥ ५३ ॥ ब्रह्म
 कारनवलंदर्य का मंका धं य विगृही ॥ विमृचाः
 निर्मम ॥ ५४ ॥ भूत रुपाय कल्यण ॥ ५५ ॥ भूत
 रुत ॥ ५६ ॥ युस नात्मा न ॥ ५७ ॥ चतिन का कृति ॥ ५८ ॥
 ॥ सर्वं ब्रह्म न भू मं रु किं लह नं यनी ॥ ५९ ॥ रुः
 क्ता मा म हि ज्ञाना निया वा नू य म्म सि त ल न ॥

११०

११०

गता मां तत्त्वता द्यात्मा विभक्त तदनन्त ॥ ६० ॥ स
 र्वकर्मसिद्धि यिसुदा कृष्ण ॥ ६१ ॥ मद्गुया शुभ ॥ ६२ ॥
 लुसादा दवा प्राप्ति ॥ ६३ ॥ यदमव्यय ॥ ६४ ॥
 वं न सा सर्वकर्मसिद्धि मयि स न्यस्य मत्यन ॥ ६५ ॥
 द्विथा गमुपागित्य मच्चिरु ॥ ६६ ॥ सततं रुव ॥ ६७ ॥
 मच्चिरु ॥ ६८ ॥ सर्वदं गन्तुं सि मत्युसादा रु विष्णु सि ॥ ६९ ॥
 अथ येन महेकाना न ॥ ७० ॥ अविनिर्मुक्ति ॥ ७१ ॥

सि

यदहं कर्ममात्रिणं नया तस्य ह्येति मन्यते। मिथ्ये
 वयवसायकं पुनरिति ह्यनिथाश्रुतिः॥५२॥ स्व
 हावजं न को नय निवदुः ४ ह्येन कर्म ह्य। कः
 कर्म ननु सियभाहा, कवि व्यासव (म विगत)॥५०॥
 ह्येन वयः सर्वरूपा न, ह्येन (ह) १ कर्म न निवृत्तिः।
 जुमय सर्वरूपा नि, यीगु दूरा निमायया॥५१॥
 नभव मय ही गच्छ, सर्वरूपा नरायन। मयुसा

१११

दात्यना लीति, ह्येन यथाप्राप्ति मय वृत्तं॥५२॥
 ह्येति न ह्य न माख्यातं, गुह्यकान्तरं नय मया
 विमृ (म) तद (म) व ह्य, यथेच्छ सित थ कृत्॥
 ॥५३॥ सर्व गुह्य नमं ह्य ४, मय मय व म वः
 व ४ ह्येन सिम दूर मति, कृता व द्या मि न हि
 नं॥५४॥ म न ना र म ह्य क, मा द्या जी म न म ह्य
 न। मा म वे व्या सि स ह्य न, ह्येति ह्य म विथा इति
 म

म॥६५॥ सर्वधर्मान्यपरिहृत्य मामकं भवहीं वृज्
 । अहं स्वी सर्व या यस्याः भादृयिष्यामि मा नु व॥
 ॥६६॥ वृद्धं तेनागतयस्करं नारुकायकदाच
 न । नरां नु नृष्वेव वा वृं नवमांथाः स्यात्सुयति
 ॥६७॥ यवुद्धं यवमं गुच्छं मरुक्कृष्टं हि यस्या
 ति । ह किं मयि यत्रां कृत्वा मा भवेत्प्रत्यहं भय
 ॥६८॥ नवगत्मा तनूष्वेव कश्चिन्मेषि

११२

कुरु म॥ हविता नव भगत्मा द न्य ४ प्रियुतत्रा
 वृ वि॥६९॥ अ० ॥ अतएव यवुद्धं धर्मां स्याः
 दमावथा ॥ १॥ नानयश्च नतनां ह मिदं ४ स्यामिति
 भसति ॥ १०॥ शुद्धा वा ननसूयश्च ॥ ११॥ यादपि
 या नन ॥ १२॥ यिमूक् ४ गुहा लोका न्या प्रयात्
 ध्व कर्म हर्ष ॥ ११॥ कश्चिदतनुर्न यार्थं लब्धेका
 ॥ १२॥ कश्चिदज्ञानं न ह माह ४ पुनरु

कं धनं कय ॥ ११ ॥ अर्कं न उवाच ॥ ॥ न ह्यभा
 ह ॥ १२ ॥ निर्वृत्तं त्वं त्वं सादा नमया युन ॥ १३ ॥
 गो ॥ १४ ॥ सि गतसं दह ॥ कविष्ठा वचनं तव ॥ १५ ॥
 ॥ सं कय उवाच ॥ ॥ ॐ एहं वासुदेवस्य याथ
 स्य च महात्मनश्च संवादमिमम ॥ १६ ॥ म ॥
 न ॥ १७ ॥ महर्षी ॥ १८ ॥ वासुदेवादायुः शतं न
 कु क्तुमर्ह्ययं ॥ १९ ॥ या जीया ॥ २० ॥ वा ॥ २१ ॥

११३

का कथय म ॥ २२ ॥ वा कनू स ॥ २३ ॥
 स ॥ २४ ॥ संवादमिमम ॥ २५ ॥ क ॥ २६ ॥
 यु ॥ २७ ॥ क ॥ २८ ॥ मि ॥ २९ ॥ च ॥ ३० ॥
 स ॥ ३१ ॥ स ॥ ३२ ॥ म ॥ ३३ ॥ स ॥ ३४ ॥
 वा ॥ ३५ ॥ क ॥ ३६ ॥ मि ॥ ३७ ॥ च ॥ ३८ ॥
 न ॥ ३९ ॥ क ॥ ४० ॥ यु ॥ ४१ ॥ न ॥ ४२ ॥
 न ॥ ४३ ॥ क ॥ ४४ ॥ यु ॥ ४५ ॥ न ॥ ४६ ॥
 रु ॥ ४७ ॥ नि ॥ ४८ ॥ ध ॥ ४९ ॥ वा ॥ ५० ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्री गणेशाय नमः ॥ श्री कृष्णार्जुनसंवादे यागोक्तं
 स आसादितं त्वनिर्घुं यानामसाद ॥ १२ ॥ अथ
 ॥ १२ ॥ ॥

॥ २ ॥ अथ दशवयनारुक्तिः ॥ अथ दशवयनं ॥
 तस्मै नमः कथिता दशवयनं ॥ अथ दशवयनं ॥
 ॥ १ ॥ दशवयनं दशवयनं ॥ अथ दशवयनं ॥

११४

॥ अथ दशवयनं ॥ अथ दशवयनं ॥
 तस्मै नमः कथिता दशवयनं ॥ अथ दशवयनं ॥
 ॥ १ ॥ दशवयनं दशवयनं ॥ अथ दशवयनं ॥
 ॥ १ ॥ दशवयनं दशवयनं ॥ अथ दशवयनं ॥
 ॥ १ ॥ दशवयनं दशवयनं ॥ अथ दशवयनं ॥
 ॥ १ ॥ दशवयनं दशवयनं ॥ अथ दशवयनं ॥

१७६

आशा नरकाधि

४९४

ASHA ARCHIVES